मरकज़े तसव्वुफ

की तरफ से ये

PDF FILE

का नज़राना जनाब

सूफी नौशाद ग़यासी

की तरफ से

ख़िदमते ख़लक़

के लिये पेश किया जा रहा है।

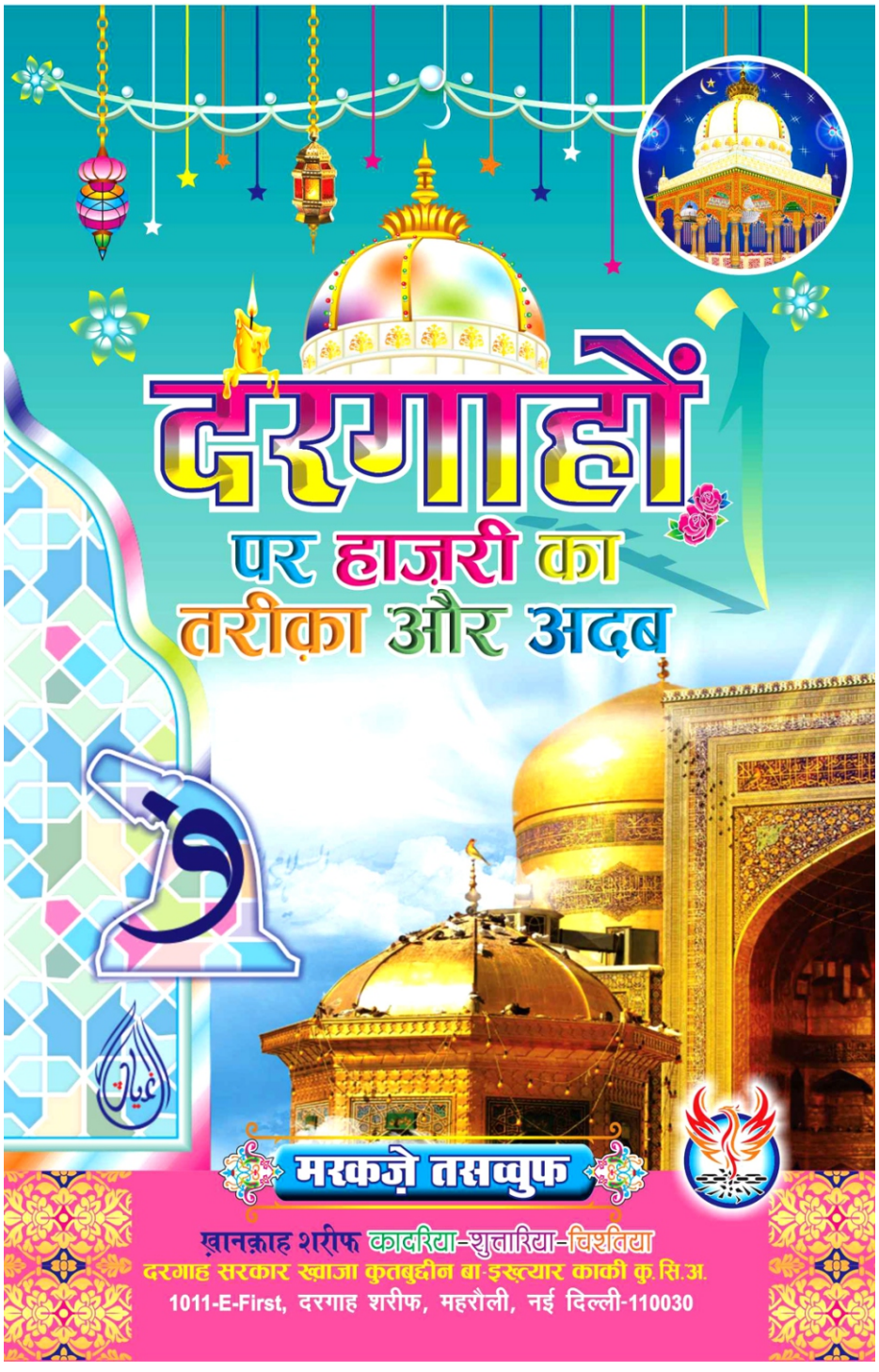
दरगाहों
पर हाज़री का
तरीक़ा और अदब
मरकज़े तसव्वुफ
ख़ानक़ाह शरीफ कादरिया-शुत्तारिया-चिश्तिया
दरगाह सरकार ख्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी कु.सि.अ.
1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030

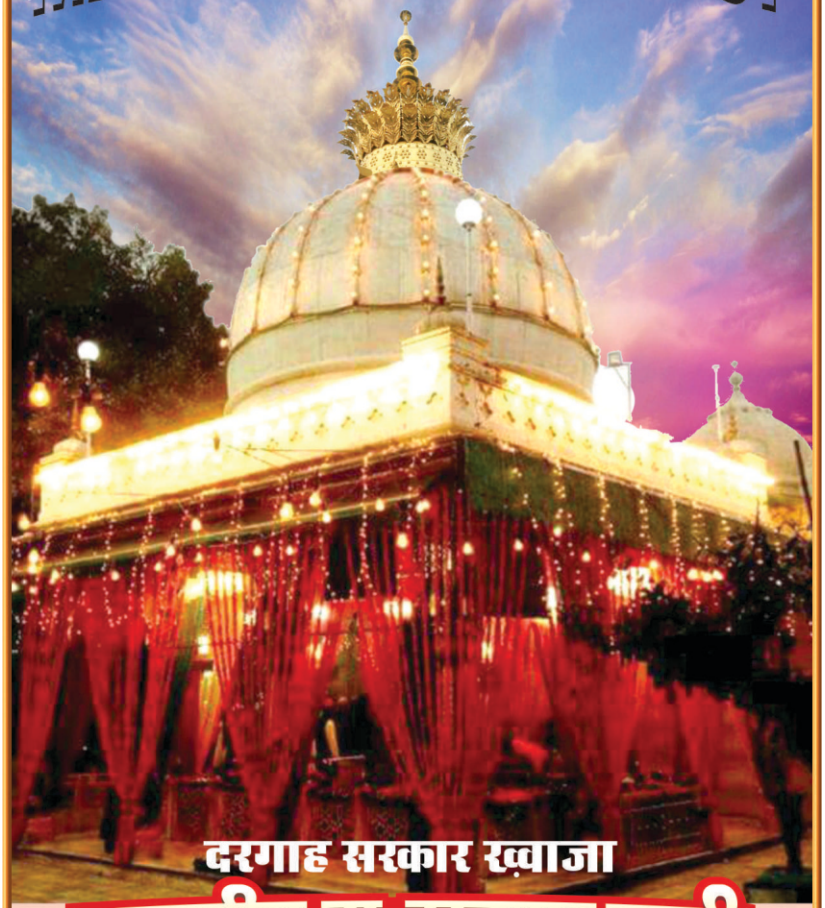

درگاہ سرکار خواجہ قطب الدین بااختیار کاکی
قدس سرّہُ العزیز
MARKAZE TASAWWUF
दरगाह सरकार ख़्वाजा
कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी
(कु.सि.अ.)
DARGAH SARKAR
KHWAJA QUTBUDDIN BA-IKHTIYAAR KHAKI (Q.S.A.)
MEHRAULI SHARIF, NEW DELHI-110030

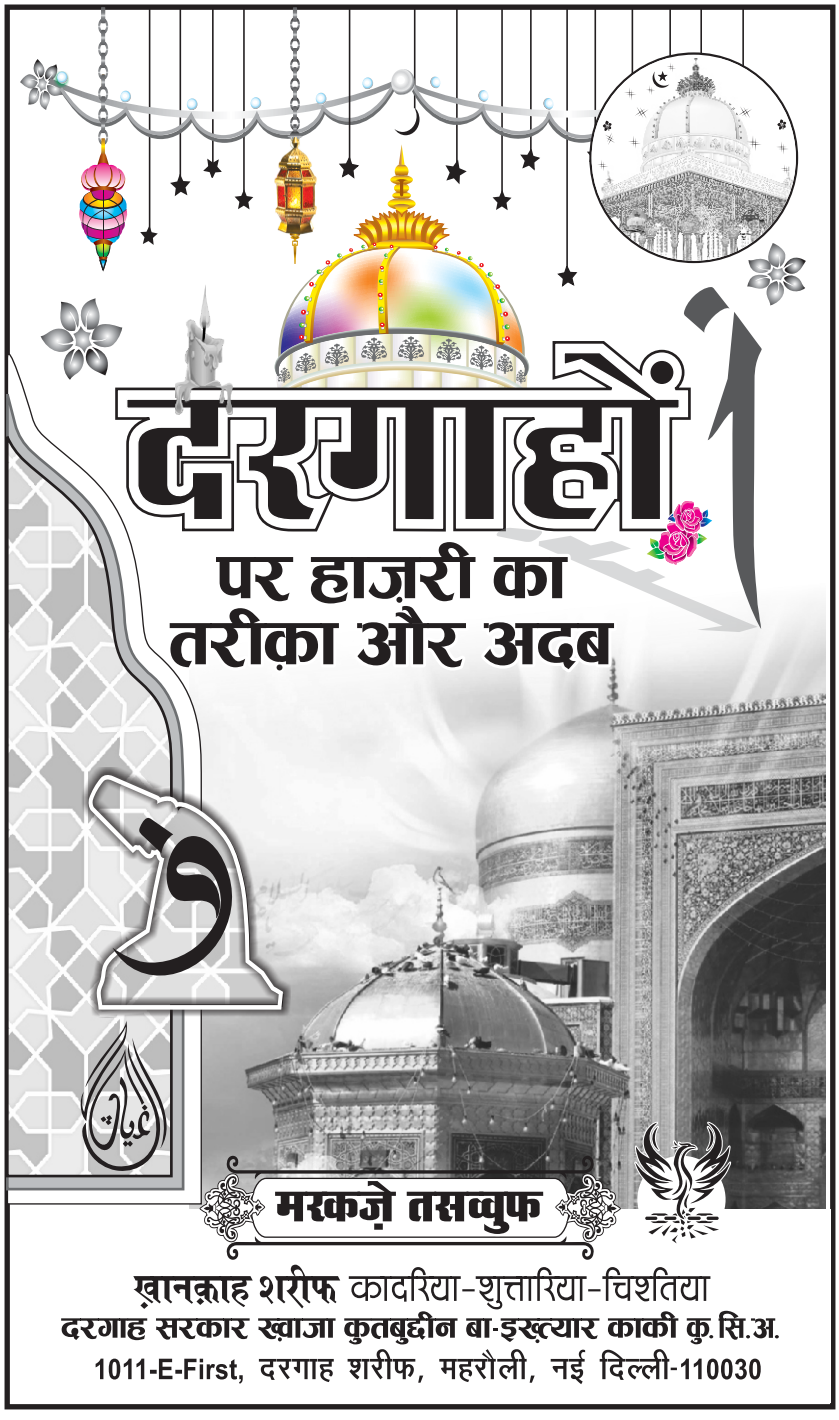

दरगाहों पर हाज़री का तरीक़ा और अदब

मरकज़े तसव्वुफ

ख़ानक़ाह शरीफ़ कादरिया-शुत्तारिया-चिश्तिया

दरगाह सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030

lQh eukt dknjh 'kÙkkjh fp'rh

ये किताब सूफी मनोज कादरी, शुत्तारी चिश्ती के तआवुन से मख़लूक की ख़िदमत और बेहोशी व लापरवाही दूर करने के मक़सद से छपवाई गई है! इस किताब को मुफ्त में हासिल करने के लिये नीचे दिये गये राब्ते पर ताल्लुक़ क़ायम किया जा सकता है :

मरकज़े तसव्वुफ

दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030

मोबाइल : 09899943607

lQh eukt dknjh 'kÙkkjh fp'rh

Mob. : 8447570036

म. नं. 2101/4, गली नं. 13, प्रेम नगर, नियर शादी पुर डिपो

डी. एम. एस. रोड, या एम. सी. डी. प्राइमरी स्कूल, न्यू दिल्ली-110008

MARKAZE TASAWWUF ★ MARKAZE TASAWWUF ★ MARKAZE TASAWWUF

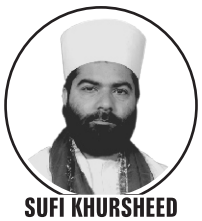

SUFI SYED AMEERUDDIN
9899943607

SUFI KHURSHEED
9654930537

SUFI ASHRAF
9711116516

SUFI SHABBIR
08080436438

SUFI MAQSOOD ALI
9350081556

SUFI AKASH
9910567808

SUFI MEHTAB
9958020975

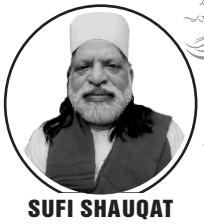

SUFI SHAMIM
9716084184

SUFI RUSTY
9716016611

SUFI SHAUQAT
9911419437

SUFI MANOJ
8447570036

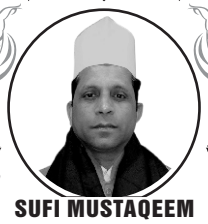

SUFI BEKAL
09873859056

SUFI ANEES
9971013298

SUFI MUSTAQEEM
09811454523

SUFI TOWHEED
8745976052

مرکز تصوف ★ مرکز تصوف ★ مرکز تصوف

सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह

سرکار صوفی غیاث الدین شاہ

fny I ------

शुरू उस ज़ाते रहीम, रहमान और करीम के नाम से जो अल्लाह नाम से मशहूर है उसके नाम से, सिर्फ नाम से, बहुत लोग वाक़िफ हैं और नाम को ही पूजते रहते हैं नाम की हक़ीक़त और असल जो कि जाननी-पहचान लेनी चाहिये उस से नावाक़िफ हैं !

हर दौर में बारीये तआला ने हमारी हिदायत और राहबरी के लिये किताबें नाज़िल की, पैग़म्बर भेजे, हम ग़फलत में ही रहे, विलायत क़ायम हुई, मक़ामे विलायत से हमें बेहतरीन ज़िंदगी जीने की हिदायत और राहबरी मौजूद है लेकिन हम अब भी ग़फलत में ही जी रहे हैं !

दरगाहें और आस्ताने क़ायम हुए हिदायत और राहबरी पाने के लिये, लेकिन हमारी ग़फलत, लालच ने उन्हें भी अपनी जायज़-नाजायज़ ख़्वाहिशात को पूरा करने का जरिया बना लिया, हीरे की खानों में हम कोयले तलाश करते घूम रहे हैं !

दरगाहों और अल्लाह के वलियों के आस्ताने पर हम सब लोग जाते हैं हाज़री के लिये, रूहानी तरक़्क़ी के लिये, लेकिन क्या हमारा हाज़िर होना, कुबूल होना, कुबूल होता है ? इस बारे में हम अंजान हैं !

दरअसल दरगाह पर या किसी भी अल्लाह के वली के आस्ताने पर, अल्लाह की किसी भी निशानी पर, हाज़िर होने का जो अदब और तरीक़ा है उससे हम नावाक़िफ हैं अगर हम तसव्वुफ और तरीक़त के पहलू से ये समझ सकें कि किस तरह हाज़िर हुआ जाता है तो बेशक हमें बहुत कुछ अता होता है!

लेकिन क्योंकि हम अदब और तरीक़ा नहीं जानते इसलिये फायदा हासिल नहीं कर पाते, हमें तरीक़ा और अदब सीखना ही होगा जिससे हम किसी भी दरगाह या आस्ताने से रूहानी फैज़ तरक़्क़ी, रहमत, बरकत हासिल कर सकने के क़ाबिल हो जायें !

तसव्वुफ के इस ख़ादिम ने, तसव्वुफ, तरीकत और जो तजुर्बा इसे अता किया उसके तहत आपके सामने कुछ अदब और हाज़री का तरीक़ा पेश किया है आप समझदारी से इस पर ग़ौर और फिकर करें, अमल करें यकीनन हमारी हाज़री कुबूल होगी – आमीन

ge lgh jkLrs ij] tks r>s lUnsg ls ij
pyus dk] bjknk] oknk] vkj vgn djrs gS !

आगे पेश किये गये सभी अलफाज़ रस्मी, तकलीदी, आम लोगों के लिये नहीं है बस हक़ीक़त जान लेने के तलबगार, कुछ समझदार लोगों के लिये है ! बाक़ी सब से, ये गुलाम माफी का तलबगार है !

सज्जादा नशीन

ejdt r l0oQ

l¸;n veh: íhu

Ph. : 09899943607

ख़ादिमे तसव्वुफ

lQh x;kl íhu 'kkg

ejdt r l0oQ

1011-E-फर्स्ट, दरगाह

सरकार ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन

बा–इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

वार्ड नं0 7, महरौली

नई दिल्ली – 110030

Ph. : 7838116286

शुरू अल्लाह के नाम सात - साथ जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है !

बारीये तआला ने अपनी किताब में फरमाया -

"आप फरमा दें के मैं तुम से इस का कोई बदला नहीं मांगता, बस जो मेरे क़रीब हैं उनसे मोहब्बत करो और, जो कोई नेक काम करेगा तो हम उसके लिये इसमें नेकी बढ़ा देंगे बिना शक अल्लाह तो बड़ा मआफ करने वाला और शुक्र अदा करने वाला है" ! (सूरह शौरा 42 - आयत 23)

तशरीह : बारीये तआला के हुक्म को सरकारे दो आलम ने फरमाया के लोगों, जो कुछ भी नेमतें तुम्हारे पास है जो सब कुछ तुम्हारे पास है और मेरा दिया हुआ है उसके बदले में, मैं तुम से कुछ नहीं चाहता, कोई बदला नहीं चाहिये हाँ मगर जो अल्लाह के रसूल के करीब हैं वो अल्लाह के करीब हैं बस ऐ लोगों उनसे मोहब्बत करो और उनसे मोहब्बत करने के बाद अगर कोई नेक काम करेगा तो हम उन मोहब्बत करने वालों के लिये नेक काम में, नेकी बढ़ा देंगे यानि जो लोग अल्लाह तआला और उसके नबी के करीबी हो जाने वालों से मोहब्बत करेंगे तो बारीये तआला आम लोगों के मुकाबले उन्हें ज़्यादा नेकी और ज़्यादा अच्छा बदला देगा !

साबित हुआ के नेक काम और अमल का ज़्यादा अच्छा बदला पाने के लिये, जो अल्लाह और उसके रसूल के करीब हैं उनसे मोहब्बत करना बेहद ज़रूरी है!

अब आयत का बाक़ी हिस्सा ज़्यादा गहराई रखता है ''बिना शक अल्लाह तो बड़ा मआफ करने वाला और शुक्र अदा करने वाला है'' यानि जो करीब हो गये अल्लाह के, उसके रसूल के, अल्लाह उन्हें मआफ तो कर ही देगा साथ ही साथ उनका शुक्रिया भी अदा करेगा !

ये बड़े कमाल की बात है जो अल्लाह और उसके रसूल से करीब वालों से मोहब्बत करेंगे वो बख़्शे तो जायेंगे ही साथ-साथ अल्लाह उनकी क़द्र करेगा उनका शुक्रिया अदा करेगा ! हमारे लिये तो हमारा बख़्शा जाना ही काफी है अल्लाह का शुक्रिया तो हमें दिन रात अदा करते रहना चाहिये यहाँ अल्लाह तआला शुक्रिया अदा करने और क़द्र करने की फरमा रहा है !

कौन है वो जिनसे मोहब्बत करने पर अल्लाह तआला हमें माफ भी करेगा और हमारा शुक्र भी अदा करेगा, क़द्र भी करेगा और अल्लाह जिसकी क़द्र करे, जिसका शुक्रिया अदा करे वो कितना अज़ीम होगा !

तश्शरीह ख़त्म

अल्लाह तआला ने हमें किनसे मोहब्बत करने का हुक्म दिया है इसका जवाब पाने के लिये हमें फिर से अल्लाह की किताब से ही जवाब तलाश करना पड़ेगा आईये मिलकर तलाशते हैं और समझने की कोशिश करते हैं !

अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया -

''बेशक अल्लाह के वलियों को ना कोई ख़ौफ है ना डर, ना ग़म''

(आयत किताबे अल्लाह) इस आयत के गहरे छुपे मायनों से हमें इशारा मिलता है के अल्लाह तआला के करीब कौन है ! समझदारों के लिये इशारा काफी होता है !

एक और आयत है –

''जो अल्लाह की राह में शहीद हो गये उन्हें मुर्दा ना कहो वो ज़िन्दा हैं और हम उन्हें रिज़्क भी पहुँचाते हैं ''

¼vk; r fd rkc vYykg ½

शहीद हो जाने के दो मायने हैं एक तो अल्लाह के लिये लड़ते-लड़ते शहीद हो जाना और दूसरे हैं अल्लाह तआला के हुक्मों के मुताबिक अपनी मर्जी, ख़्वाहिश छोड़ कर बस उस का उसी का होकर जीना, अब अपनी मर्जी -ख़्वाहिश कुछ नहीं बस जो वो चाहे जैसा वो चाहे वैसा ही ख़ुशी-ख़ुशी जियेंगे !

''उन्हें मुर्दा ना कहो वो ज़िन्दा हैं''

मुर्दा ना कहो, के मायने ये हुए के उन्हें अन्दर से भी मुर्दा ना समझो वो तो वासिल बा हक़ हो गये फना-फि-अल्लाह के मकाम पर हैं जब ख़ुदा ज़िन्दा है और जिन्दों का ख़ुदा है तो जो वासिल बा ख़ुदा हो गया वो कैसे मर सकता है वो जिन्दा हैं हयात हैं !

''हम उन्हें रिज़्क भी पहुँचाते हैं''

यानि हज़रत मूसा अ.स. की कौम को जिस तरह मन-सलवा पहुँचता था उस तरह या वो लोग जो दुनिया में ज़िन्दा हैं लेकिन दुनिया के लिये नहीं बस आख़रत के लिये

ज़िन्दा हैं !

इस आयत में भी इशारा है उन लोगों की तरफ जिनसे हमने मोहब्बत करनी और रखनी है और मोहब्बत का बदला मोहब्बत ही है !

एक और पहलू से भी हम इस बात को समझने की कोशिश करते हैं !

हज़रत मूसा अ.स. जब तीस जमा दस चालीस रातों के लिये कोहेतूर पर गये तो हज़रत हारून अ.स. को क़ौम की राहबरी और हिदायत के लिये अपने पीछे छोड़ गये, तो जब हज़रत मूसा अ.स. ने अपनी क़ौम को बिना हादी और बिना राहबर के नहीं छोड़ा तो ये कैसे मुमकिन है सरकारे दो आलम अपनी ज़ाहिरी ग़ैर-मौजूदगी में अपनी उम्मत को बिना हादी और राहबर के छोड़ दें ? नामुमकिन है !

जो बात चल रही है उसी बात को ज़्यादा गहराई से समझने के लिये ये समझ लेना जरूरी है के अल्लाह तआला हिदायत देने वाले, हादी और सही राह दिखाने वाले को पहले भेजता है और हिदायत लेने वालों को बाद में, ये बारीय तआला की हिकमत है और ये इसलिये है के लोगों को ये शिकायत ना हो के हम हिदायत किस से हासिल करते ? और हिदायत लेने वाले अपनों में से ही, अपना जैसा हादी ना चुन लें ! पैग़म्बर हादी-राहबर को चुन कर भेजना या पैग़म्बर के जरिये हादी और राहबर का चुनना, अल्लाह तआला का काम है कोई चुनाव या इलेक्शन नहीं है !

vk;r

‘‘ आज के दिन तुम्हारे दीन से काफिर मायूस हो गये, ना उम्मीद हो गये तो तुम उन से मत डरो, और मुझ से डरते रहो आज के दिन तुम्हारे लिये दीन को मैंने मुकम्मल कर दिया और मैंने अपना ईनाम–नेमत तुम पर पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिये इस्लाम को बा तौर दीन पसंद किया ’’

lqjg ek;nk 5 & vk;r 2

bl vk;r dk 'kkuu utqy&rQlhj vkj r'kjhg

जब सरकारे दो आलम आख़री हज से फारिग़ होकर मदीना मुनव्वरा की तरफ चले तब 18 जिलहिज्ज़ा हिज़री 10 को ग़दीर ख़ुम्म के मैदान में ये आयत नाज़िल हुई तब जबकि सरकारे दो आलम ने हज़रत मौला अली का हाथ अपने हाथ में लेकर उठाया और फरमाया ^^ft ldk eekykg vyh ml dk eekykg**

इस ग़ुलाम की समझ में ये अब तक ना आया के जब विरासत–विलायत का आम ऐलान हो गया तो सरकारे दो आलम के ऐलान को दरकिनार करके क्यों–कर चुनाव और इलेक्शन के जरिये किसी और को ख़लीफा चुना गया ख़लीफा और हादी और राहबर चुनने का काम इलेक्शन के जरिये नहीं होता !

अब जब मौला अली के ज़ाहिरी–बातिनी–इल्मी विरासत का ऐलान ख़ुम ग़दीर में हुआ तो वहाँ तो सब

मुसलमान ही मौजूद थे और हाजी भी थे असहाब भी थे तो इस वक्त अल्लाह तआला ने ये वही क्यों भेजी के " आज के दिन तुम्हारे दीन से काफिर मायूस और ना उम्मीद हो गये " उस मैदान में कोई काफिर तो था ही नहीं फिर काफिर किसको पुकारा गया !

हक़ीक़त ये है के उन असहाब, हाजी और मुसलमानों के गिरोह में कुछ लोग सिर्फ नाम के मुसलमान - असहाब, हाजी थे उनका इरादा था के पैग़म्बर और नबी के वस्ल के साथ उनके कानून यानि अल्लाह की किताब भी दफन कर देंगे और वो ही बेहयाई - बेशर्मी जो अल्लाह तआला को नापसन्द है वो ही शुरू कर देंगे ! पहले की उम्मतें भी ऐसा कर चुकी हैं लेकिन जब सरकारे दो आलम ने हज़रत मौला अली को अपना वारिस करार दिया तो उन मुसलमानों के भेस में छुपे काफिरों के इरादों पर बिजली गिर गई तब ये आयत नाज़िल हुई के " आज के दिन काफिर तुम्हारे दीन से मायूस और ना उम्मीद हो गये "!

अब जब पौशीदा और छुपे तौर पर रिसालत और नबुवत के मक़ाम का नाम बदलकर विलायत मकाम हो गया और हज़रत अली हर किस्म और तरीके से विलायत और विरासत पा गये तब अल्लाह तआला ने वही के जरिये ये आयत नाज़िल फरमाई के " तुम उनसे ना डरो सिर्फ मुझसे डरो आज के दिन, दीन मुकम्मल हो गया और तुम पर अपना ईनाम और नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये दीने इस्लाम को पसंद किया " !

अब समझदार लोगों की समझ में आ गया होगा के अल्लाह तआला ने किन से मोहब्बत करने का तकाज़ा किया है, हुक्म दिया है और वो कौन पाकीज़ा लोग हैं ? वो पाकीज़ा लोग हैं आले रसूल, कुछ ख़ास असहाब, अल्लाह के वली और वो कामिल ओ अकमल सूफी हज़रात जो इनके नक्शे क़दम पर चलकर हक़ीक़ी इस्लाम की तबलीग़ कर रहे हैं अल्लाह तआला के कानूनों के मुहाफिज़ बनकर पेशवाओं की सुन्नत को क़ायम-दायम करने में लगे हैं हमें उनसे मोहब्बत करनी और रखनी है !

अब समझने वाली बात ये है के अल्लाह की किताब से बड़ी कोई किताब नहीं है उसके हुक्म को हमने समझ लिया जान लिया तो अब कोई भी आलिम - मुल्ला या फिरक़ा, चाहे वो बात को कितनी भी घुमा - फिराकर कहे या लिखें या छपवायें, और अक्सर आलिम - मुल्ला और फिरके हमें अल्लाह की किताब और हदीसों के नाम पर ही उनके मायने तोड़ मरोड़कर पेश करते हैं और हमें गुमराह करते हैं उनसे बचकर, अल्लाह की किताब का सीधा हुक्म मानना है और उनसे मोहब्बत करनी और रखनी है जिसका हुक्म अल्लाह तआला ने हमें दिया है !

हमें अल्लाह के करीब हो जाने वाले आले रसूल से मोहब्बत का हुक्म मिला है तो पहले हुए - आले रसूल हसनी और फिर हुए आले रसूल हुसैनी और फिर हुए आले रसूल हसनी - हुसैनी फिर औलादे असहाब ऐ वफादार और ख़ास और फिर अल्लाह के वलियों की दरगाहें और

आस्ताने !

क्योंकि ये चन्द अलफाज़ जो आपकी ख़िदमत में पेश किये जा रहे हैं ये इन्हीं सब पाकीज़ा लोगों की दरगाहों और आस्तानों में हाज़री देने के आदाब और तरीकों के बारे में है इसलिये कुछ लफ्ज़ों के मायने समझने बेहतर रहेंगे !

njxkg% दरगाह लफ्ज़ के हक़ीक़त के मायने होते हैं –

(1) दरबार (2) कचहरी (3) अदालत ! ये तीन मायने दरगाह लफ्ज़ के असली हैं और इन तीनों जगह पर इन्साफ होता है रस्मों को मानने वाले लोगों ने दरगाह लफ्ज़ के मायने बदलकर ना जाने क्या – क्या मशहूर कर दिये हैं और नासमझ लोग उन्हीं मायनों को सही समझते हैं !

अब जब हम दुनिया की किसी भी अदालत में जाते हैं तो वकील – अच्छे वकील को पहले अपनी हिमायत, अदालत के सामने रखने के लिये बा अदब होकर, और उस तरीके से बाअदब होकर जाते हैं जो अदब कचहरी ने मुकर्रर कर रखा है जितनी बड़ी अदालत या कचहरी उतने ज़्यादा आदाब ! इसके बाद हर कचहरी या अदालत के काम करने का तरीका होता है पहले ये फिर ये इसके बाद वो, तब जाकर अगर हम हक़ पर हैं तो फैसला हमारे हक़ में होता है जब फानी और ख़त्म हो जाने वाली दुनिया की चीजों के लिये हमें अदब और तरीक़े की ज़रूरत होती है तो क्या रूहानी अदालत यानि दरगाह जहाँ पर दुनिया और आख़रत के फैसले होते हैं वहाँ तरीक़े और अदब की जरूरत नहीं होगी?

बेशक होगी, और ज़्यादा रूहानी अदब और तरीके की जरूरत होगी और अगर हम बेअदब-बे-तरीके से दुनिया की अदालत में जाते हैं तो हमें कचहरी से इन्साफ तो बाद में मिलेगा लेकिन हमें अदालत और कचहरी से अदालत की बेहुरमती, अदब से ना रहने की सज़ा पहले मिल जायेगी !

अब अगर इस ग़ुलाम की बात का आप मक़सद समझ गये होंगे तो ये भी समझ गये होंगे के क्यों अल्लाह के वलियों - के आस्तानों पर दरगाहों पर हमारी दुआ क़ुबूल नहीं होती दरअसल दरगाहों पर हाज़िर होने से पहले हमें दरगाह पर हाज़िर होने के आदाब सीखने ही होंगे वरना ख़ाली दामन ही वापस आयेंगे और ये भी हो सकता है के अदब और तरीका ना जानने की वजह से अपनी बे अदबी की सज़ा साथ लेकर लौटें !

vkLrkuk% आस्ताना लफ्ज़ के मायने होते हैं (सीखने की जगह) यानि हक़ीक़ी इल्म-शऊर ज़िंदगी जीने का सही तरीक़ा सीखने की जगह, जैसे स्कूल - कॉलेज - यूनिवर्सिटी वग़ैरह - बस फर्क ये है के इन जगहों पर दुनिया का इल्म सिखाया जाता है लेकिन आस्ताने और दरगाहें हक़ीक़त का रूहानी इल्म, ज़िंदगी जीने का सही तरीक़ा, अदब, शऊर, सीखने की जगह है लेकिन अफसोस के साथ ये कहना पढ़ रहा है के कुछ लोगों ने तो आस्तानों और दरगाहों को सिर्फ जायज़ - नाजायज़ ख़्वाहिश पूरी होने की जगह समझ लिया है और कुछ लोगों और सरकारी महकमों ने दरगाहों और आस्तानों को अपनी कमाई का ज़रिया समझ लिया है कुछ

लोगों ने मन्नतें मांगने की जगह समझ लिया है !

ये तसव्वुफ का ख़ादिम ये नहीं कह रहा के दरगाहों और आस्तानों पर ख़्वाहिश या मन्नतें पूरी नहीं होती, ये गुलाम सिर्फ ये कहना चाह रहा है दरगाहें और आस्तानें सिर्फ और सिर्फ ख़्वाहिशें पूरी हो जाने, मन्नतें पूरी हो जाने की ही जगह नहीं है बल्कि उस से और बहुत ज़्यादा कीमती जगहे हैं !

दरगाहें और आस्ताने तो अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं ये जगहें तो बारीये तआला को जानने, पहचान लेने, मआरफत हासिल कर लेने की जगह हैं निशानी उस को कहते हैं जिस से उसकी पहचान हो जाये जिसकी वो निशानी है ये बारीये तआला की मर्ज़ी और इख़्त्यार है के वो जिसे चाहे अपनी निशानी करार दे बारीये तआला ने हज़रत सालेह अ.स. की ऊँटनी को भी, जो कि नजासत भी करती थी अपनी किताब में, अपनी निशानी करार दिया तो अल्लाह तआला के वलियों के आस्ताने तो अल्लाह तआला की निशानी होंगे ही ! अगर हम अल्लाह तआला के वलियों की दरगाहों और आस्तानों का उस तरह अदब और एहतराम नहीं करेंगे जैसा के करने का फर्ज़ और हक़ है तो हमारा हाल भी वैसा ही होगा जैसा हज़रत सालेह अ.स. की क़ौम का हुआ था और होगा क्या ? हो रहा है बस तरीक़ा दूसरा है लेकिन हम रस्मों में इतने उलझे हुए हैं के अपनी बरबादी देख ही नहीं पा रहे हैं !

अल्लाह तआला ने अपनी किताब में जो बार-बार अपने क़रीबी और वलियों से मोहब्बत का हुक्म दिया है और उनकी शान के बारे में फरमाया है हमें सीधा-सीधा ये हुक्म मानना है और पूरी तरह दिल से मानना है !

कुछ गिरोह और फिरकों ने अल्लाह की किताब, हदीसों के तर्जुमें बदले, बेशक कुरान नहीं बदला जा सकता हक़ीक़त में कुरान बदला नहीं जा सकता, लेकिन फिर भी कुरान को बदला गया, तफसीर - तर्जुमा - शाने नुज़ूल को बहाना बनाकर अल्लाह की किताब पर अपनी समझ थोपकर उसे बदला गया अब अरबी में तो अल्लाह की किताब वो ही है बस ज़ेर और ज़बर और पेश का इज़ाफा किया गया लेकिन हमारी समझ में अल्लाह की किताब के हक़ीक़ी मायने नहीं है बल्कि वो मायने हैं जो फिरकों के मुल्लाओं ने और उस फिरके से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों ने हमें समझाये हैं और इसका सबसे बड़ा सुबूत ये है अल्लाह की एक किताब है सबके लिये एक हुक्म है लेकिन सब अपने-अपने तरीक़े को सही मानकर अपनी मर्ज़ी चला रहे हैं !

अब क्योंकि हमने अल्लाह की किताब का सीधा-सीधा हुक्म समझ लिया है तो किसी भी गिरोह का कोई भी आदमी कुछ भी कहता रहे लेकिन हमने, जो अल्लाह के क़रीब हैं उसके वली हैं उनसे मोहब्बत करनी हैं !

एक मीठी और समझने की बात ये गुलाम आपकी ख़िदमत में पेश करना चाहता है वो ये है के अल्लाह की

किताब, अल्लाह तआला ने इन्सान की बेहतरी के लिये बनाये गये क़ानून, इन्सान मानें, अमल करे इसलिये नाज़िल फरमाई यानि अल्लाह की किताब तदब्बुर और तफक्कुर के लिये है समझने और अमल करने के लिये है अल्लाह की किताब को समझने और उस पर अमल करने में इन्सान की बेहतरी है असली भलाई समझने में है और अमल करने में है लेकिन जिस मक़सद से अल्लाह तआला ने अपनी किताब उतारी वो मक़सद तो ख़त्म हो गया बस पढ़ना-रटना, दोहराना रह गया, पढ़ना-रटना-दोहराना, याद करना - हाफिज़ हो जाना, ग़लत बात नहीं है लेकिन अल्लाह तआला की किताब के नाज़िल होने का मक़सद सिर्फ पढ़ना, रटना, दोहराना हाफिज़ हो जाना नहीं है ! बल्कि समझना और अमल में लाना है !

आजकल जो माहौल है वो आप भी जानते हैं के पढ़ना, रटना, दोहराना रह गया है समझना और अमल में लाना बिल्कुल ख़त्म हो गया है और तो और वो लोग भी जो अपने आप को हाफिज़ कहलवाते हैं वो भी एक बार हाफिज़ की सनद लेकर भूल जाते हैं और सिर्फ रमज़ानों से पहले, कमाने की वजह से दिन भर दोहराते हैं और रात को सुना देते हैं ! तसव्वुफ के इस ख़ादिम के एक हाफिज़ साहब मुरीद हैं वो बारह मेहराबें सुना चुके हैं यानि तरावीह में बारह बार अल्लाह की किताब सुना चुके हैं उनके ज़रिये इस गुलाम को पता चला के रमज़ान के महीने में अरबी ज़बान में कुरान सुनाने वाले हाफिज़ और लुक़मा देने वाले हज़रात के बीच में

एक मुआयदा पहले से तय होता है के लुक़मा देना भी है या नहीं और देना है तो कहाँ देना है इससे आप काफी कुछ समझ सकते हैं !

पढ़ना होता ही समझने के लिये है जो समझा नहीं गया वो पढ़ना बेकार है तो अब तक जो आपने यहाँ पढ़ा क्या वो समझ लिया रूकिये, और ये सवाल अपने आप से पूछिये अगर आपके अन्दर से जवाब हाँ आये तो आगे पढ़िये वरना दोबारा ग़ौर से पढ़ना शुरू कीजिये !

हमें ये याद रखना चाहिये के कुरान का हाफिज़ होना अलग बात है और कुरान का मुहाफिज़ होना अलग बात है हाफिज़ वो होता है जो रट्टा मारकर याद करता है दोहराता है क़ौम को अपनी समझ से कुरान के मायने समझाता है इसीलिये यज़ीद बिन माविया ने पहले 50,000 हाफिजों को इनाम देकर उनसे बैत ली और बाद में मस्जिद के मेम्बर पर बैठकर अपने वालिद की बहन फुप्पो से निकाह को जायज़ करार दिया जो कि कुरान के बिल्कुल ख़िलाफ था यज़ीद को ये मालूम था के हाफिज़ तो मेरे गुलाम हैं ही, अब ख़ुदा के कानून को बदलने से मुझे कौन रोकेगा ?

कुरान का मुहाफिज़ वो होता है जो हर हालत में चाहे जान जाये, कितना भी ज़ुल्म हो लेकिन अल्लाह तआला के कानूनों पर अमल करता है उसके कानूनों की हिफाज़त करता है इसीलिये इमाम आली मकाम हज़रत हुसैन ने नेज़े के ऊपर रखे सर से कुरान सुनाकर हमारे सामने मिसाल पेश की के कुरान के मुहाफिज़ ऐसे होते हैं ? समझ रहे हैं ना

भाई आप ! हाफिज़ होना सस्ती बात है मुहाफिज़ होना बहुत बड़ी – बहुत बड़ी – लायके ताज़ीम कैफियत है !

मेरे अज़ीज़ दोस्त, अब हमने ये समझ लिया के अल्लाह तआला ने अपनी किताब में दिये गये कानूनों पर अमल करने, अमल कराने वालों को अपना क़रीबी और वली क़रार दिया है और हमें उनसे मोहब्बत करने का हुक्म दिया है और मोहब्बत ये तकाज़ा करती है के हम उन से सीखें उनकी ज़िंदगी से कुछ सीखें, और अमल में लाकर अपनी ज़िंदगी को दुनिया और आख़रत के लिये बेहतर बनायें !

अल्लाह की किताब में ये भी साफ – साफ फरमाया गया है के –

(1) अल्लाह के क़रीबी और वली ज़िन्दा हैं

(2) उन्हें ना मुर्दा कहना चाहिये ना मुर्दा समझना चाहिये

(3) अल्लाह के क़रीबी वलियों को कोई ख़ौफ या ग़म नहीं है !

(4) हमें अल्लाह के क़रीबी वलियों से मोहब्बत करनी और रखनी है !

अब किताबें अल्लाह की आयत से ये साफ–साफ साबित हो गया के सबसे पहला क़ीमती अदब और तरीक़ा ये है के हम साहिबे मज़ार को मुर्दा ना समझकर ज़िन्दा समझकर हाज़िर हों, जब हम किसी भी सरकारी दफ्तर में जाते हैं तो कितना अदब का ख़्याल रखते हैं के कहीं कोई ग़लती ना हो जाये लेकिन अल्लाह के क़रीबी वलियों की

दरगाहों पर हम बे अदब रहते हैं क्यों ? इसकी दो वजहे हैं पहली वजह तो ये है के हमारे अन्दर की आँख खुली नहीं है जिससे हम साहिबे मज़ार को ज़िन्दा, हयात देख सकें हम कहते तो हैं के अल्लाह के वली ज़िन्दा हैं हयात हैं लेकिन हमारा दिल और बाहर की आँख ये ही दिखाती है के मज़ार है बस, हम कहने और करने में झूठे हैं कहते कुछ और हैं सोचते कुछ और हैं दूसरी वजह ये है आस्ताने और मज़ार के आस-पास, नज़दीक वो लोग जो अपने आप को दरगाह - आस्ताने - मज़ारे अक़दस का वारिस या पीरज़ादा - साहिबज़ादा - सज्जादा नशीन कहलवाते हैं या किसी कमेटी के मुलाज़िम या किसी सरकारी महकमे के मुलाज़िम, जो मज़ारे अक़दस के नज़दीक बहुत नज़दीक रहते हैं उन्हें ख़ुद अदब और तरीके का पता नहीं है वो तो सब बस पैसों के चक्कर में रहते हैं कभी किसी दरगाह पर हाज़री हो तो ग़ौर से देखें इन लोगों को, साफ समझ में आ जायेगा के वो साहिबे मज़ार को कुरान के सरासर ख़िलाफ जाकर सिर्फ मुर्दा और मज़ार समझ रहे हैं !

मज़ारे अक़दस पर नज़राने के फूल पेश करना अलग बात और तरीक़ा है ! और मज़ार पर फूल फेंकना अलग बात और तरीक़ा है पहले देखो, ग़ौर से देखो फिर मज़ारे अक़दस पर फूल - अतर चादर अदब से पेश करो फूल फेंको नहीं अब जब मज़ारे अक़दस के आस-पास रहने वाले ही बेअदब और ग़फलत से चूर हैं तो आने वाले मेहमान भी उन्हें देखकर वैसा ही करते हैं हमें जागना ही

होगा, होश में आना ही होगा !

अब जो बात गुलाम आपके सामने पेश करने जा रहा है वो बात आपको कुफ्र लग सकती है ! आप नाराज़ भी हो सकते हैं लेकिन पहले ठण्डे दिल से समझ लेना – कुरान उनको बख़्शा जाता है जो ख़ुद पढ़ और सुन नहीं सकते, कुरान के मुताबिक जो ज़िन्दा हैं क्या उन्हें ही कुरान सुनाना समझदारी है ज़िन्दा कुरान के वारिसों को साक़ित कुरान सुनाना समझदारी नहीं है ये गुलाम कुरान पढ़ने की मुख़ालफत नहीं कर रहा, जो समझते नहीं है अमल नहीं करते उसकी मुख़ालफत कर रहा है जो समझ गये ? वो ज़िन्दा कुरान के सामने साक़ित कुरान नहीं दोहराते वो तो बस नज़रे करम के सवाली होते हैं !

अल्लाह के क़रीबी वलियों की दरगाहें वो जगह हैं के यहाँ वो मिलता है जिसके मिलने के बाद किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहती और वो मिलता है जिसे मौत भी नहीं छीन सकती अब भी बाक़ी रह गया क्या कुछ !

आगे अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया के '' अल्लाह तआला के क़रीबी वलियों को कोई ख़ौफ या ग़म नहीं है '' बेशक जो अल्लाह के क़रीब हो गये उनको कोई ख़ौफ या ग़म क्यों होगा ? वो तो अल्लाह के करीब हो गये तो साबित हुआ के जो अल्लाह के करीब हो जाता है उसे फिर कोई ख़ौफ या ग़म नहीं होता तो फिर दरगाहों पर हाज़िर होने का मक़सद सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला के करीब होना चाहिये और अल्लाह तआला के करीब वो ही

करा सकता जो पहले अल्लाह तआला के क़रीब हो चुका हो ये उसकी मर्ज़ी है के वो हमारे हाज़िर होने का तरीक़ा और अदब देखकर सिफारिश करता है या नहीं !

अल्लाह तआला ने पहले ही अपनी किताब में फरमा दिया के बस वो कुछ ख़ास लोगों की सिफारिश क़ुबूल फरमाता है ! जब हम उनके यहाँ जा रहे हैं जिनकी सिफारिश अल्लाह तआला क़ुबूल फरमाता है तो हमारा तरीक़ा और अदब ये होना चाहिये के हम सिर्फ और सिर्फ, रूहानी तरक्की, रूहानी फैज़, अन्दर की पाकी, उनके नक्शे क़दम पर चलने की तौफीक़ अता हो सिर्फ ये ही दुआ करें उन्हें सब पता है क्यों फालतू की दुआ मांगते हो हमारे अन्दर - बाहर की हालत - कैफियत - हमारा लालच - हमारी ख़्वाहिशें सब पता हैं और दरगाह इन्साफ करने की जगह तो है ही !

इस ग़ुलाम की ज़िंदगी के 54 साल दरगाह सरकार ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी क़ु.सि.अ. में गुज़रे हैं इसके अलावा ये ग़ुलाम सैंकड़ो दरगाहों पर ज़ियारत हो और हाज़री क़बूल हो इसलिये सफर कर चुका है लेकिन अफसोस के इस ग़ुलाम ने बेहोशी - बेअदबी ग़फलत - बे-शऊरी और बस पैसों का लालच ही पाया ये कोई सोचता ही नहीं के जिस वली की दरगाह है उस वली की तालीम को कैसे आगे फैलाया जाये लेकिन बस कुछ दरगाहें, बस कुछ दरगाहें इससे बची हुई हैं !

आगे आयत में हमें अल्लाह के करीबी वलियों से मोहब्बत करने और रखने का हुक्म मिला है इस आयत में सबसे ज़्यादा ग़ौर और फिकर से समझने लायक़ अलफाज़ मोहब्बत है मोहब्बत किसे कहते हैं ये समझने की कोशिश करते हैं मोहब्बत के लिये ये ज़रूरी है के मोहब्बत करने वाला, मोहब्बत के बदले कुछ भी चाहता नहीं है ये ग़ुलाम यहाँ हक़ीक़त की मोहब्बत की बात कर रहा है वरना इस ज़माने में तो हवस और ख़्वाहिश पूरी होने के लिये मोहब्बत का दावा किया जाता है !

ekgCcr dk nkok vkj m l ij ;l ukQjekfu ;k
vYykg&vYykg g fdru gjr dh ckr

ekgCcr dju okyk rk jgrk g lnk gh xyke
ok rk djrk g lnk gh xykeh dh ckr

हक़ीक़त की मोहब्ब्त में, मोहब्बत करने और रखने वाला हमेशा ही उसकी पसंद का ख़्याल रखता है जिससे वो मोहब्बत करता है अपनी मर्ज़ी नहीं चलाता - समझदार को इशारा काफी होता है तो दरगाहों पर जहाँ हम हाज़री देने जा रहे हैं बस उनकी पसंद का ख़्याल रखना है वहाँ नज़दीक रहने वालों की पसंद का ख़्याल नहीं रखना बस उसकी पसंद का ख़्याल रखना है जिससे मोहब्बत करने का अल्लाह ने हमें हुक्म फरमाया है !

अब हमें ये कैसे पता चले के जिस दरगाह पर हम हाज़िर हुए हैं उन्हे क्या पसंद है ? अब ज़रा ग़ौर फरमायें -

जहाँ हम हाज़िर हुए हैं वो बुज़ुर्ग अल्लाह तआला और उसके रसूल और मम्बए विलायत के हुक्मों को मानकर - पूरा अमल करके ही तो इस मक़ाम पर पहुँचे हैं मम्बाये विलायत का हुक्म, अल्लाह के रसूल और नबी के हुक्म से अलग नहीं है तो और अल्लाह के रसूल और नबी का हुक्म, अल्लाह तआला के हुक्म से अलग नहीं है तो बस अल्लाह तआला का हुक्म मानकर उसे पूरा करो यही तो साहबे मज़ार को पसंद है कुछ और बातें समझने के क़ाबिल है उन्हें भी ध्यान से समझ लीजिये !

(1) आस्ताना क्योंकि सीखने की जगह को कहते हैं इसलिये सीखने के लिये पहले दिमाग़ को फालतू बातों से ख़ाली कर लीजिये !

(2) आस्ताना-ऐ-अक़दस से थोड़ी दूरी पर आरामदेह हालत में बा अदब होकर बैठ जाईये ! कम समझदार और दिखावा करने वाले लोग हैं वो जो मज़ारे अक़दस से क़रीब से क़रीब होने की कोशिश करते हैं वो ये नहीं जानते के दरगाहों पर जिस्मानी नज़दीकी बे-अदबी और बेकार है यहाँ तो रूहानी तौर पर नज़दीक होना है जिस्म चाहे दूर रहे !

(3) अब जब आप दिमाग़ को फालतू बातों से ख़ाली करके बा-अदब आराम से बैठ गये तब दिल से अपने आपको साहिबे मज़ार से जोड़ने की कोशिश कीजिये, अपने अन्दर जाने की कोशिश कीजिये, बाहर की बातों पर ध्यान मत दीजिये, कानों में रूई लगा लेना भी बेहतर है ये मददगार साबित होगा अपने ही अन्दर जाने में और साहिबे मज़ार से रूहानी तौर पर जुड़ जाने में !

(4) अब ये हालात हो जाने के बाद अपने अन्दर कुछ सुने सुनने की कोशिश कीजिये आपके अन्दर कोई और बोलेगा और यक़ीनन वो हक़ और आपके लिये पसंद बताने का ज़रिया होगी !

(5) अगर दिमाग़ फालतू बातों से ख़ाली नहीं हो रहा तो ये इस बात का सुबूत है आपने अपने दिमाग़ में फालतू कूड़ा करकट भर रखा है आप मोहब्बत के दावे में झूठे हैं तवज्जोह को बार-बार साहिबे मज़ार की तरफ लाईये यक़ीनन आपको साहबे मज़ार की पसंद समझ में आयेगी अब आपको अपनी वजह से वो ना पसंद हो तो बात और है !

(6) दरगाहों पर हाज़री के वक्त ख़ुद को अन्दर और बाहर से चुप कर लेना बेहतर होता है इससे साहिबे मज़ार से जुड़ जाने में आसानी होती है वहाँ मौजूद बाक़ी लोग ना-समझी में, तरीक़ा और अदब ना जानने की वजह से कुछ भी करते रहें आप उनकी तरफ तवज्जोह ना दें ! सन्नाटे को सुनने की कोशिश करें !

(7) जिस तरह रूई या स्पंज पानी को अपने अन्दर समो लेते हैं उसी तरह आप भी अपने वुजूद - जिस्म में वहाँ का रूहानी और पाक माहौल अपने अन्दर समोने की कोशिश करें !

jLe v tk jg x;h :g fcykyh uk jgh
Qy lQk jg x;k rydhu x tkyh uk jgh

अज़ान की भी बस रस्म सी रह गई है हज़रत बिलाल र.अ. जैसी तड़प और मोहब्बत नहीं रही बस बाहर-बाहर की दिखावे की हाज़री रह गई हज़रत इमाम ग़ज़ाली के नक्शे क़दम पर चलना खत्म हो गया !

cgk'k Hkh ge ykx gl xQyr Hkh gl rkjh
vQlkl dl vU/kk Hkh gl vkj lk Hkh jgl gl

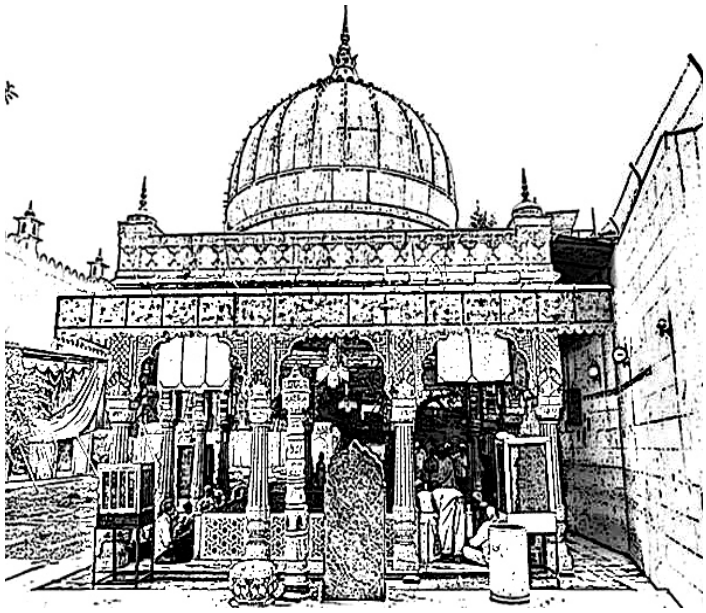

दरगाह हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)

ft;kjr % ज़ियारत लफ्ज़ के मायने हैं मुलाकात - मिलना - बातचीत करके कुछ सीखना सिर्फ घूमने - फिरने और रस्मी तौर पर मज़ारे अक़दस पर फूल चादर पेश करने को ज़ियारत नहीं कहते हैं !

अल्लाह की किताब से ये पहले साबित हो गया है के हमने मोहब्बत करनी है दरगाहों से -अल्लाह के वलियों से -और मुलाकात करनी है ! अब हमें सबसे पहले अपने आप से ये सवाल करना चाहिये के जिस दरगाह या आस्ताने पर हम गये वहाँ हमारी उस अल्लाह के वली से मुलाकात हुई भी या नहीं ? क्योंकि अल्लाह तआला ने तो अपनी किताब में फरमा दिया के " अल्लाह " के वली ज़िन्दा हैं उन्हें ना मुर्दा कहो ना मुर्दा समझो और उनको कोई ख़ौफ या ग़म नहीं है " तो मुलाकात और बातचीत तो होनी ही चाहिये अगर हमारी ज़ियारत - मुलाकात - बातचीत नहीं हो पाती तो इसका मक़सद हुआ के ज़ियारत ही नहीं हुई और ज़यादा बड़ी कमनसीबी ये के हम समझ रहे हैं के हम ज़ियारत कर आये !

अल्लाह ज़िन्दा है अल्लाह के वली ज़िन्दा हैं ज़िन्दों की ज़िन्दा से बात होती है मुर्दा हम हैं, बे होश, लापरवाह, ग़फलत में हम हैं हम सिर्फ दुनिया के ऐतबार से ज़िन्दा हैं हम मुर्दा होकर ही चल फिर रहे हैं सब काम कर रहे हैं लेकिन रूहानी तौर पर हम मुर्दा हैं क्योंकि हक़ीक़त में ज़िन्दा तो वो होता है जो होश में रहकर हर पल अल्लाह की याद में रहता है इस बात को समझने की कोशिश करो के

हम हर वक्त बाहर का कोई नशा किये बिना भी हम नशे में है ! शहवत का नशा, हवस का नशा, मालदार होने का नशा, सोने - चाँदी का नशा और ताकतवर होने का नशा और बहुत सारे नशे हैं जिन्होंने हमें मुर्दा बना दिया है अब अगर हम मुर्दा हैं और और अल्लाह के वली ज़िन्दा हैं तो हमारे मुर्दा होने की वजह से हमार ज़ियारत और मुलाकात नहीं हो पाती अब हमें ज़िन्दा होना है और यक़ीन जानो ये कोई बहुत बड़ा मुश्किल काम नहीं है बस इरादे और एक कामिल मुर्शिद की जरूरत है !

पहले बताया जा चुका है हमें अगर मोहब्बत है तो उनकी पसंद का ख़्याल रखना है अपनी पसंद और ख़्वाहिश को तो बिल्कुल छोड़ देना है हमारा ज़्यादा भला किस में है ये अल्लाह और उसके वली हमसे भी ज़्यादा जानते हैं हम तो हीरे की ख़दान में कोयले मांगने वाले लोग हैं !

अब हम समझ गये होंगे के अल्लाह के वली की ज़ियारत यानि मुलाकात के लिये हमें बेहोशी और ग़फलत छोड़कर - होश में रहना है तभी ज़ियारत, रूहानी फैज़ और तरक्की मुमकिन है !

नासमझ और झूठे और लालच से भरे हैं वो लोग, वो कमेटियाँ, वो महकमे जिन्होंने दरगाहों का असली मक़सद ख़त्म करके दरगाहों को दुकान बनाकर पैसा कमाने का ज़रिया बना दिया !

हक़ीक़त में अल्लाह के करीब हो जाने वाले वलियों की दरगाहें और आस्तानें, ज़िंदगी किस तरह जियें, ये

सीखने, राहबरी लेने की जगह हैं हमें सीखना है वहाँ जाकर के अदब और शऊर क्या होता है हम अन्दर और बाहर से कैसे पाक हों, हम वो ज़िंदगी कैसे जियें जैसी ज़िंदगी जीना बारीये तआला पसंद फरमाता है हमारी आख़रत कैसे अच्छी हो, हमारी दुनिया कैसे अच्छी हो और भी बहुत कुछ सीखना है बस सीखना ही है सीखना ज़िंदगी में कभी ख़त्म नहीं होता !

gk t jh% हाज़री लफ्ज़ हजूरी से बना है । हुजूर - हज़रत - हाज़िर ये सब एक ही गिरोह के अलफाज़ हैं हुजूर लफ्ज़ के मायने होते हैं जो हमेशा बारीये तआला के दरबार में हाज़िर रहे यानि हमेशा बारीये तआला की याद में रहे हाज़री का मक़सद होता है के किसी भी ग़ैब के इशारे से ये तय हो जाना के ज़ियारत - मुलाकात कुबूल हो गयी इसे फिर समझते हैं !

हर साल लाखों लोग हज करने जाते हैं हज लफ्ज़ के मायने हैं '' ख़ुद को बदलने के लिये अल्लाह के घर की ज़ियारत करना '' अब उन लाखों लोगों में से कितने लोगों का हज कुबूल होता है ? कितने लोग हाजी बनकर ख़ुद को बदल देते हैं ये अलग बात है लेकिन हक़ीक़त में कितने लोगों का हज कुबूल हुआ ये अल्लाह ही जानता है वैसे तो सब नियत पाक होने का दावा रखते हैं लेकिन हक़ीक़त में किसकी नियत पाक है ये अल्लाह ही जानता है और उसी का हज भी कुबूल होता है और उसे भी ग़ैब से इशारा भी मिल जाता है के हज कुबूल हुआ - ज़ियारत पूरी हुई !

बस इसी तरह किसी भी दरगाह पर हाज़री – ज़ियारत कुबूल हो तो ग़ैब से कुछ इशारे मिलते हैं ये दरगाहों पर हाज़री देने का दावा रखने वालों की नियत पर है बस हाज़री का मक़सद ये है के सिर्फ आप ही ना मान लें के मेरी ज़ियारत और हाज़री हो गयी जिस दरगाह पर आप गये हैं वहाँ से ग़ैब से कुछ इशारा मिले के ‘ हाँ ’ तुम्हारा आना कुबूल हुआ !

एक आदमी ने दूसरे इन्सान पर रौब जमाने की ग़रज़ से कहा “ मुझे ऐसा – वैसा ना समझना मैं प्रधान मंत्री को जानता हूँ ” दूसरे इन्सान ने सादगी से जवाब दिया “ क़ीमती ये नहीं के तुम प्रधान मंत्री को जानते हो क़ीमती ये हैं के प्रधान मंत्री ये कहें के हाँ मैं इसको जानता हूँ ” इसमें अच्छी समझ वालों के लिये इशारा है !

बस हाज़री हक़ीक़त की हाज़री उस हालात को कहा जाता है जब ग़ैबी इशारे से आपको पता चल जाये के ज़ियारत कुबूल हो गयी इसका तो लुत्फ ही कुछ और है !

सज्जादा नशीन
ejd t r l0oQ
l ¸ ;n veh : íhu 'kkg
Ph. : 09899943607

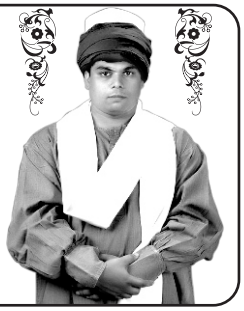

बदलते वक्त और लालची लोगों ने अल्लाह के क़रीबी वलियों की दरगाहों का मक़सद ही बदल दिया है बस दरगाहों पर जाओ, फूल अगरबत्ती पेश करो कुछ रटी रटाई दुआ करो लफ्ज़ो की तसल्ली ले लो और ग़फलत से भरे हुए ही, अपने लालच की वजह से वहाँ मौजूद लोगों का लालच पूरा करो, नज़राना दो वापस आ जाओ बस हो गई ज़ियारत और हाज़री - दरगाहों पर नज़दीक रहने वाले लोग चाहे वो कोई भी हों, तुम्हारे नाजायज़ लालच और ख़्वाहिशों को अच्छी तरह समझते हैं इसीलिये वो दुआ भी ऐसी करत हैं जो तुम्हें पसंद हो वजह ये है के तुम्हारी मन पसंद दुआ होगी तभी तो नज़राना मिलेगा अरे भाई नज़राना तो नज़र आने पर पेश किया जाता है !

आप और हम जो भी साहिबे मज़ार के लिये, पेश करने के लिये जाते हैं क्या वो फूल, चादर, शीरनी या और जो कुछ भी लेकर जाते हैं और जो भी नक़द रकम एजेन्टों दलालों को देते हैं या गुल्लक में डालते हैं क्या वो उन तक पहुँचता है या फिर इंतज़ाम करने का दावा करने वाले उसमें से ख़ुद खाते हैं ? इस गुलाम ने अपनी आँखों से देखा है ख़ूब अच्छी तरह जानता है के वो पैसा दावत खाने जामा मस्जिद पर जाकर तला हुआ मुर्ग़ा खाने, शराब पीने, क्रिकेट पर सट्टा लगाने में खर्च होता है बेशक, सब लोग ऐसे नहीं हैं लेकिन ये हमें कैसे पता चलेगा के हमारा पैसा हलाल और जरूरी कामों के लिये इस्तेमाल हो रहा है अल्लाह की मख़लूक की ख़िदमत के लिये खर्च हो रहा है या हराम कामों

में बेकार हो रहा है शिर्क और बिदअत को मना करने वाले ख़ुद भी शिर्क और बिदअत का खा रहे हैं और क़दमबोसी करने को शिर्क भी बता रहे हैं उन्हें अल्लाह की किताब में सूरह यूसुफ पढ़ने का मशवरा दिया जाता है !

बहरहाल सोचने और ग़ौर करने वाली बात ये है के किसी भी दरगाह या आस्ताने पर हाज़री के लिये जाते वक्त ऐसा हम क्या लेकर जायें जो उस साहिबे मज़ार तक पहुँच जाये, ऐसी क्या चीज़ है ?

ऐसी क्या चीज़ है ? के हम अल्लाह के वली के आस्ताने पर पेश कर सकें और वो चीज़ उन तक पहुँच भी जाये और क़ुबूल और मक़बूल भी हो सके तो बस वो चीज़ है के हम अन्दर-बाहर से पाक होकर अदब के साथ अपने दिल को, ख़ुद को ही वहाँ पर पेश कर दें के ये ग़ुलाम अब आपके हवाले है आप मुझे ही क़ुबूल फरमा लें, ये ग़ुलाम गीली मिट्टी की तरह आपके हवाले, आप जो भी चाहें इस गीली मिट्टी का बना दें !

ये ही तरीक़ा अपने पीरो-मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर होने पर भी होना चाहिये बारीये तआला की रहमत और बरक़त की बारिश होती है अल्लाह के वलियों के आस्तानों पर और पीरो-मुर्शिद की सोहबत में, लेकिन हमको भी तो भीग जाने का तरीक़ा आना चाहिये !

ख़ुद को हम बदलना नहीं चाहते और हर क़िस्म का फायदा चाहते हैं ख़ुद को बदले बिना हमें कभी भी फायदा

नहीं हो सकता !

हमें रस्मी इस्लाम, रस्मी तसव्वुफ से बचकर हक़ीक़ी इस्लाम और हक़ीक़ी तसव्वुफ की गहराई में जाना ही पड़ेगा तब ही हम अपने आपको अल्लाह तआला की रहमत और बरकत के क़ाबिल बना सकेंगे !

इसलिये ये तसव्वुफ का ख़ादिम गुज़ारिश करता है के हम सबको बेकार की रस्मों से बचकर होश में रहकर, समझदारी से बा-अदब होकर ही, दरगाहों पर हाज़री के लिये जाना चाहिये !

nvk% दुआ के हक़ीक़त के जो मायने हैं वो तो ये ख़ादिम आपके सामने लफ्ज़ों के जरिये पहले ही ब्यान कर चुका है अब ये ख़ादिम आपके सामने दुआ का एक और पहलू ब्यान करना चाहता है इस ग़ुलाम की बात का इन्कार करने का हक़ आपको है लेकिन इंकार करके आप सिर्फ ये साबित करेंगे के आप हक़ीक़त को समझना नहीं चाहते हैं आप रस्मों और देखा-देखी के कामों को ही सब कुछ समझते हैं, आप ज़्यादा समझदार नहीं है !

हमें ये समझना होगा के हम दुनियाँ को बहुत पसंद करते हैं दुनियाँ कर हर एशो आराम माल, सोना, चाँदी, गाड़ी - बंगला और भी बहुत कुछ चाहते हैं साथ ही साथ ये भी चाहते हैं के हमें कोई ग़म या परेशानी तो बिल्कुल ना हो बस हर तरफ, हर तरीके से आराम ही आराम हो !

हमें, हमारी मौत के बाद की कोई फिकर ही नहीं है बिल्कुल नहीं है ज़रा अपने दिल पर हाथ रखकर ईमानदारी

से सोचो के क्या हम रोज़ाना पाँच मिनट भी ये सोचते हैं के हमारा मरने के बाद क्या होगा, नहीं बिल्कुल नहीं सोचते, हाँ बस कुछ रस्में ज़रूर पूरी कर देते हैं और ख़ुद को बहला देते हैं हमारे राहबरों ने कुछ झूठे नुस्ख़े हमें दे दिये है बस उनका कहा मानकर हम बे-फिकर रहते हैं के जन्नत में चले जायेंगे, अपने आमालों की बुनियाद पर नहीं तो अपने पैग़म्बर और रसूल की शफाअत और बख़्शने की बुनियाद पर, लेकिन हम ये नहीं जानते के हमारे रसूल और पैग़म्बर भी उन्हीं की सिफारिश करेंगे जो इस दुनिया में नेक और अन्दर-बाहर से पाक होकर ज़िंदगी गुज़ारेगा !

कहने का मक़सद ये है के हमें इस दुनियाँ और इसके आराम से जितनी मोहब्बत है बस उतने ही बे-फिकर हम मरने के बाद से है इसीलिये हमारी सारी दुआऐं बस इसी दुनियाँ के आराम ख़्वाहिशों से ताल्लुक़ रखने वाली होती हैं क्यों ? क्यों हमारी दुआऐं आख़रत और मरने के बाद की हालत की बेहतरी के लिये क्यों नहीं होती ?

वैसे तो ये ख़ादिम मुल्लाओं से और मुल्ला क़िस्म के लोगों से दूर ही रहना पसंद करता है क्योंकि ज़्यादातर रटे - रटाये तोतों की तरह होते हैं इनके पास हर सवाल का जवाब, रटा रटाया जवाब, होता है कुरान शरीफ दोहराते रहते हैं लेकिन कुरान शरीफ में ग़ौरो फिकर करके, सीखते नहीं, बस इनसे तो बड़ी-बड़ी तक़रीर करा लो, झूठी किताबें लिखवा लो बहरहाल

कुछ अरसा गुज़रा, अचानक एक मौलवी साहब

मरकज़े तसव्वुफ में तशरीफ लाये वो एक दरगाह की शाही मज्सिद के पेशे सलात भी रह चुके थे उसी दरगाह शरीफ में रोज़ाना शाम के वक्त और जुम्मे के बाद दरगाह शरीफ में दुआ भी कराते थे अब वो ना जाने कहाँ चले गये हैं इस गुलाम ने उन्हें पहले पानी पेश किया फिर ख़ुद ही चाय बना कर पेश की, इसके बात बातचीत का दौर शुरू हुआ !

बातों-बातों में गुलाम ने उनसे सवाल किया के -

'' आप अल्लाह के उस वली के नाम से शज़रा पढ़ते वक्त (शैख़ुल इस्लाम) क्यों पढ़ते हैं जबकि अल्लाह के वली ने शैख़ुल इस्लाम की पोस्ट को, नौकरी को, मक़ाम को क़ुबूल नहीं फरमाया था ये तो अल्लाह के उस वली पर बोहतान और इल्ज़ाम हुआ '' '' शैख़ुल इस्लाम हुकूमत की तरफ से दिये जाने वाले एक ओहदे का नाम है '' मौलवी साहब ने फरमाया मुझसे पहले जो पढ़ते थे वो भी ये ही पढ़ते थे इसलिये उनको देखकर मैं भी ये पढ़ता हूँ ग़लत हो या सही मैं ये पढ़ना नहीं छोड़ सकता जबकि उनको साबित कर दिया गया था कमाल तो ये हुआ के उनको तनख़्वाह देने वाले ने जब हक़ीक़त उन्हे बताई तो बाद में उन्होंने शज़रा पढ़ने में (शैख़ुल इस्लाम) लफ्ज़ पढ़ना बंद कर दिया ! पता चला, सच हो या झूठ, हक़ीक़त हो या ग़लत रिवायत, मुल्ला तो वो बोलता है जो मुल्ला जी को तनख़्वाह देने वाला बुलवाना चाहता है क़ौम गुमराह हो रही है होती रहे !

क्या आप जानते हैं कि ख़ाना-ऐ-काबा (अल्लाह के घर) में सलात अदा करवाने वाला, आम लफ्ज़ों में नमाज़

पढ़ाने वाला इमाम भी सऊदी अरब के बादशाह का, हुकूमत का ग़ुलाम है वो एक लफ्ज़ भी सऊदी अरब की हुकूमत के ख़िलाफ नहीं बोल सकता चाहे हक़ीक़ी इस्लाम को तोड़-मरोड़कर-घुमा-फिराकर बदलना पढ़े !

दिली दोस्तो, ये तो पता करो के ख़ाना काबा (अल्लाह के घर) में लाखों हाजियों को हज के दौरान जो सलात में आगे रहकर सलात अदा करवाता है तो सऊदी हुकूमत किस तरह उसे वो ओहदा देती है ? सऊदी हुकूमत किस तरह क़ुरआन और उसकी तफसीर छपवाती है ? ज़रा समझदारी से काम लेना सीखो !

बहरहाल मौलवी साहब से बातचीत होती रही और मुझे ज़ाहिरी-रस्मी इस्लाम की बातें बताते रहे जिनमें कई बातें बिल्कुल बे-बुनियाद थी और उनकी कोई दलील या तस्दीक़ नहीं थी इस ग़ुलाम ने उनको चुप कराने की गरज़ से ये सवाल किया '' अरे मौलवी साहब ये बताईये के आप जो दुआ करवाते हैं वो सब दुआ दुनिया की तरक्की-आराम के बारे में ही होती है इससे तो ''आमीन'' बोलने वालों के दिमाग़ में दुनियाँ ही रहेगी आख़रत दिमाग़ में आयेगी ही नहीं और आप अल्लाह के उस वली के दरबार में दुआ करवा रहे हैं जिसने कभी भी ख़ुद दुनिया को चाहा ही नहीं बस हमेशा बारीये तआला की याद में फना हो गये और एक बात और बताईये ये जो आप दुआ कराते हैं (या अल्लाह हमारी जायज़ तमन्नाओं और ख़्वाहिशों को पूरी फरमा) या

(जिन लोगों ने मुझसे आपके दरबार में दुआ करने के लिये कहा है उनकी दुआ कुबूल फरमा, उनके मक़सद को पूरा फरमा) इसके पीछे क्या वजह और राज़ है जबकि आप अच्छी तरह जानते हैं के कुरान के मुताबिक़ तमन्ना और ख़्वाहिश है तो जायज़ नहीं हो सकती नाजायज़ ही हो सकती है और जो जायज़ है वो तो पहले से ही मौजूद है –

vk; r % क्या तुमने हमसे क़समें ले रखी हैं के क़यामत तक जो तुम चाहोगे वो हम करते रहेंगे – ¼vk; r fd rkc vYykg½

अब मौलवी साहब संजीदा हो गये और कहने लगे अरे सूफी साहब आप तो सब समझते हैं फिर मेरा मुँह क्यों खुलवा रहे हैं आप तो जानते ही हैं के दरगाहों पर ज़्यादातर लोग अपनी नाजायज़ ख़्वाहिशों को पूरा करवाने ही आते हैं किसी को दौलत चाहिये किसी को बंगला सब को कुछ ना कुछ चाहिये, अल्लाह को पाने के लिये, अल्लाह के वली को पाने के लिये मक़ामे विलायत से फैज़याब होने कौन आता है दरबार में या मस्जिद में, तो उनके बुरे नफ्स को अगर नहीं सहलाऊँगा तो नज़राना कैसे मिलेगा और ये जो मैं कहता हूँ जिन लोगों ने मुझसे दुआ के लिये कहा उनकी दुआ कुबूल फरमा तो इसका मक़सद ये होता है के ये सुनकर बाक़ी मौजूद लोग भी मुझसे दुआ करने की कहें और जब वो मुझसे दुआ करने की कहेंगे तो बंद मुट्ठी करके कुछ ना कुछ नज़राना तो देंगे बस यही वजह है इस झूठ और मक्कारी की !

इस ग़ुलाम ने कहा और आखरत ? मौत के बाद क्या होगा ? क़ौम को गुमराह करने का बड़ा गुनाह, इसका क्या होगा ? वो बोले अरे मियाँ साहब किसने देखी है आख़रत किसने वहाँ से वापस आकर बताया है और कहकर वो चले गये !

ये ग़ुलाम कई घंटों तक चुपचाप सोचता रहा ग़ौर करता रहा इन्सान के अन्दर और बाहर में कितना फर्क होता है बस उसी दिन से इस ग़ुलाम को ये यक़ीन हो गया के अल्लाह तआला के होने पर सबसे कम यक़ीन मुल्लाओं को होता है और हर उस आदमी को भी कम यक़ीन होता है जिसने बारीये तआला को जाना नहीं, पहचाना नहीं, झलक ते नहीं देखी !

पिछले वरकों को कई बार पढ़ो और ये समझने की कोशिश करो के तसव्वुफ का ये ख़ादिम आपको क्या हक़ीक़त समझाना चाहता है ?

एक और गुज़ारिश ये है के जो इस बातचीत में नहीं कहा जा सका उसे भी समझने की कोशिश करो, अनकहा, कहे हुए से बहुत ज़्यादा क़ीमती होता है बेहोशी छोड़कर होश के यार बनो, होशियार बनो !

अब जबकि हमारी बात-चीत दरगाहों के अदब और तरीक़े के बारे में हो रही है इसलिये कुछ और बातें समझना भी बेहतर रहेगा इसलिये हम मिलकर समझते हैं!

gEn % हम्द के मायने तारीफ के हैं वो तारीफ जो सिर्फ अल्लाह तआला के लिये ख़ास है तारीफ लफ्ज़ तआररूफ

से बना है जिसके मायने INTRODUCTION – परिचय कराने, पहली बार मिलने के हैं जैसे हम किसी भी महफिल में दो नये इन्सानों को मिलाते वक्त, मुलाकात कराते वक्त ये कहते हैं के आप की तारीफ ये है और आपकी तारीफ ये है या हम किसी भी नये आदमी से मिलते वक्त उससे पहचान बनाने के लिये पूछते हैं आपकी तारीफ ?

तो इस पहलू से हम्द के मायने वो अलफाज़ हुए जो हमें अल्लाह से पहचान करायें चाहे वो गाकर हो, ढफ के साथ हो या तबले, हारमोनियम के साथ हो इससे फर्क नहीं पड़ता हम्द के मायने हुए वो अलफाज़ जो हमें अल्लाह तआला की सिफात बताकर उसको जानने – पहचान लेने की तरफ हमारे दिल को ले चलें !

एक बात और समझ लेने की है के जो लोग हम्द – तारीफ और तआररूफ के मायने नहीं जानते उन्होंने सिर्फ हम्द के मायने तारीफ करने–बढ़ाई करने–प्रशंसा करने समझे वो भूल में है, उन्होंने लफ्ज़ों को ऐसे पिरोया, ऐसे लफ्ज़ लिखे जो जो सुनने वालों को अल्लाह की बढ़ाई और प्रशंसा की तरफ ले जाते हैं तआररूफ और INTRODUCTION से दूर करते हैं

'' बेशक सब तारीफें अल्लाह की हैं '' कुरान की ये पहली आयत है, हक़ है, लेकिन तारीफ के मायने सिर्फ प्रशंसा नहीं होते, जो जरिया तआररूफ कराये, पहचान करा दे उसे तारीफ कहते हैं तो हम्द के मायने हुए वो जरिया चाहे वो कैसा भी हो जो हमें अल्लाह तआला से तआररूफ –

परिचय कराने का बहाना बने, लिखे हुए या गाये हुए वो अलफाज़ हम्द है जो अल्लाह तआला से हमारा तआररूफ – परिचय – INTRODUCTION कराये !

आजकल हम्द के नाम पर सिर्फ वो अलफाज़ लिखे या गाये जाते है जो प्रशंसा और बढ़ाई से भरे होते हैं प्रशंसा, बढ़ाई करना अच्छा तो है लेकिन हक़ीक़त और मक़सद से दूर कर देता है प्रशंसा में दूरी है, दुई है, द्वेत है जो तसव्वुफ के पहलू से नुकसान देह है क्योंकि हक़ीक़त के मायनों के ऐतबार से अल्लाह तआला से दूरी पैदा करती है !

अगर उपर कही गयी बात समझ में नहीं आई तो तीन चार बार पढ़कर समझने की गुज़ारिश है !

बस जो अल्लाह की ज़ात वा सिफ़ात हमें समझाये उसका हमसे तआररूफ कराये, परिचय कराये वो ही हक़ीक़त में हम्द है बाक़ी चाहे हम्द के नाम पर कुछ भी लिखा जाता रहे, गाया जाता रहे हक़ीक़त में हम्द नहीं हैं हम्द के नाम पर जो हमें सुनाया जाता है वो कहीं हमें राह से गुम तो नहीं कर रहा ये ग़ौर करने लायक़ बात है !

ukr % सरकारे दो आलम हज़रत अहमदे मुज्तबा मोहम्मद मुस्तफा सल–लल–लाहो तआला वा आलेही वसल्लम की शान ब्यान करने के लिये जो अलफाज़ लिखे जाते हैं गाये जाते हैं चाहे वो किसी भी तरीक़े के साथ हों नात कहे जाते हैं ! हम्द – तारीफ – तआररूफ की जो हक़ीक़त अभी पहले बतायी गयी उसी तरीक़े से नात को समझना बेहतर है!

अब ये ख़ादिम आपके सामने हम्द और नात के बारे में पेश करना चाहता है वो - जो पहलू और बात हक़ीक़त तो है लेकिन बहुत ख़तरनाक है सिर्फ कुछ बहुत अच्छी समझ रखने वालों के लिये है रस्मी, तक़लीदी आम लोगों के लिये हरगिज़-हरगिज़ नहीं है क्योंकि वो अपनी नासमझी की वजह से इस हक़ीक़त के अपने मन मर्ज़ी से मतलब ना निकाल लें, इसका डर है ! अब आपके सामने ये ख़ादिम तसव्वुफ नफसियाती हक़ीक़त को ब्यान करता है !

जब हम हम्द या नात सुनने या सुनाते हैं तो लिखे गये, पढ़े गये, सुने गये अलफाज़ सुनकर हमारे अन्दर बारीये तआला और उसके रसूल का इश्क़ पैदा होता है हमें खुशी मिलती है और हम मस्त हो जाते हैं हमें बहुत अच्छा लगता है और हमारी कैफियत भी पाक हो जाती है लेकिन असली सवाल तो ये है के एक घण्टे बाद ही हम वो ही चालाक - मक्कार - धोखेबाज और सिर्फ रस्मी, दिखावटी मुसलमान क्यों रह जाते हैं इसकी क्या वजह है आईये इसे समझते हैं !

एक पैग़म्बर ने फरमाया के " शैतान, शैतान के पीछे छुप जाता है " इस पर ग़ौर करो ? होता ये है के (नफ्से अम्मारा) बुरा नफ्स हमें ये धोख़ा देता है के नात सुन तो ली, - वाह-वाह भी कर ली, नात पढ़ने वाले को, अपनी, अपने पैग़म्बर से इश्क़ होने की वजह से पैसे भी लुटाये अब और क्या करें ? नेक अमल हो तो गया और नेक अमल क्या करें ? थोड़े बहुत जो हैं वो करते भी हैं बस हो गया

काफी है !

बस ये समझ लेना हमें हक़ीक़ी इस्लाम की समझ से हटा देता है अल्लाह की किताब के हुक्मों को, सरकारे दो आलम के हुक्मों को भुला देता है एक तो हमें पहले से ही हक़ीक़ी इस्लाम का पूरा पता नहीं है उपर से जो कुछ पता है उस पर भी सही तरीके से अमल नहीं हो पाता ! अब भय्या मुल्ला जी को नात पढ़ने से पैसे मिलते हैं वो तो कुछ भी नात के नाम से पढ़कर सुनाने का रिवाज़ बनाऐंगे ही, जितनी देर हम नात सुनने में लगाते हैं क्या उतना वक्त कुरान शरीफ का तर्जुमा सुनने में नहीं लगा सकते ? पर तर्जुमा सुनाने से मुल्ला जी को पैसे तो नहीं मिलेंगे ना ! इसलिये नात पढ़ना फैशन और कमाई का जरिया बन गया है ! क्या कभी सरकारे दो आलम ने नात पढ़ने का कोई हुक्म दिया है ?

हमारे यहाँ सालाना उर्स के मौक़े पर दरगाह शरीफ के अन्दर नात और मनक़बत पढ़ने पर वो झगड़ा होता है के बस मत पूछो - पहले मैं पढूँगा नहीं पहले मैं पढूँगा क्योंकि पहले पढ़ने वाले को वक्त भी ज़्यादा मिलता है और ज़्यादा वक्त मिलने पर पैसे भी ज़्यादा मिलते हैं अगर सब नात और मनक़बत पढ़ने वाले को उनकी पसंद से वक्त दे दिया जाये तो रात हो जायेगी ! कुल और ख़त्म शरीफ नहीं होगा अबे तुम्हें अक़ीदत का नज़राना पेश करने से किसने रोका है कभी भी आकर पढ़ लो लेकिन नहीं अकेले में पढ़ने का क्या फायदा ? पैसे कहाँ से मिलेंगे, अब ख़्वाजा साहब

तो मज़ारे अक़दस से उठकर तो तुम्हें रकम दे नहीं सकते वहाँ तो बस एक अज़ीम तौहीद का, विलायत का ख़ज़ाना है लेकिन तुम्हें कुछ और ही चाहिये ! तुम्हें चाहिये पैसा तो तुम माहौल आर रिवाज़ भी ऐसे ही बनाओगे जिसमें तुम्हें पैसा मिले ? कैसी मोहब्बत, कैसी अक़ीदत सब दिखावा है ! हक़ीक़त की मोहब्बत और अक़ीदत तो अमल, नेक अमल कराकर, ज़िंदगी को अन्दर से पाक करती है !

कुरान शरीफ में आयत है '' अपने दीन में (गुलू) पैदा ना करो '' गुलू लफ्ज़ के मायने हैं - अतिश्योक्ति, बढ़ा चढ़ा कर कहना, आज के ज़माने में नात और मनक़बत लिखने वाले, पढ़ने वाले कुछ (पढ़े लिखे जाहिल) हज़रात कुरान शरीफ के हुक्म के ख़िलाफ जाकर, नात और मनक़बत लिखते - पढ़ते हैं और नात और मनक़बत में गुलू ये चीज़ हमें कुरान के हुक्मों के खिलाफ जाने में मदद करती है और हमारे दिमाग़ को कुछ का कुछ बना देती है !

कुल मिलाकर नात-मनक़बत पढ़ना सुनना बेहतर तो है लेकिन इस शर्त के साथ के उसमें गुलू ना हो वो हमारे अन्दर हक़ीक़ी इश्क़ पैदा करे और हमें बेहतर और पाक अमल की तरफ ले जाकर हमारी ज़िंदगी को अन्दर-बाहर से पाक करे - आमीन

eudcr % बारीये तआला के वली जितने भी गुज़रे हैं उनकी शान बयान करने के लिये जो भी अलफाज़ लिखे, पढ़े या गाये जाते हैं उसको मनक़बत कहते हैं ये याद रहे के वली लफ्ज़ विलायत से ताल्लुक़ रखता है और वली के

मायने जैसा आम लोग समझते हैं यार या दोस्त नहीं है बल्कि कुरान के मुताबिक वली लफ्ज़ के तीन मायने हैं अल्लाह की किताब में जहाँ-जहाँ वली लफ्ज़ आया है उस तर्जुमे के मुताबिक वली के मायने हैं -

¼1½ ftEenkj % जो समाज को बेहतर बनाने का जिम्मेदार हो जिसको बारीये तआला ने मुआशरे को संभालने, बेहतर करने की जिम्मेदारी अता की हो !

¼2½ ck&b[R;kj % वो जिसको अल्लाह तआला ने रूहानी ताकतें और इख़्त्यार दिया हो !

¼3½ okfjl % वो जो रिसालत और नबूवत का नाम बदलकर विलायत किया गया हो उसकी जो विरासत है उसको संभालकर उसके मुताबिक़ ज़िंदगी जिये, वारिस कहलाता है !

बस कुछ लोगों ने जो वली के मायने दोस्त मशहूर किये हैं सरासर ग़लत है और अल्लाह की किताब से कहीं साबित नहीं होते ! पूरे समाज में झूठी और ग़लत, तक़रीरों और झूठी और ग़लत किताबों के जरिये अपने-अपने फिरके को बढ़ाने के लिये, आम लोगों के दिमाग़ में कुछ का कुछ भरा जा रहा है !

मनक़बत लिखते, पढ़ते और गाते हए और सुनते हुए भी वो ही सभी शर्ते हैं जो हम्द और नात के बारे में हैं नेक अमल और हालते सुनकर और पाक मस्ती लाना मनक़बत का मक़सद था - है और बरकरार रहना चाहिये !

egfQy lek% जब भी-जहाँ भी किसी पाक मक़सद के लिये कुछ लोग या ज़्यादा लोग जमा हों उसे महफिल कहते हैं बेकार और दुनियावी बातें करने के लिये अगर कुछ लोग जमा हों तो उसे महफिल नहीं कहा जा सकता !

समाँ के मायने सुनने के हैं समाँ लफ्ज़ समीं या समीऊन से बना है तसव्वुफ और तरीक़त में सुनना एक ख़ास काम है तसव्वुफ में सुनने का मतलब सिर्फ सुन लेना नहीं होता बल्कि सुनकर समझ लेना और दिल में बसा लेना होता है इसी से ज़िंदगी बदलती है इसलिये महफिले समाँ के मायने हुए के किसी ख़ास और पाक मक़सद को हासिल करने के लिये, सुनने और सुनकर समझ लेने के लिये कुछ लोगों का जमा होना !

सुनने के आदाब हैं जो महफिल के हिसाब से होते हैं सबसे पहले आदाब सुनकर समझ लेना है या ऐसा भी कह सकते हैं के सिर्फ समझने के लिये सुनने को ही समाँ कहा जा सकता है अल्लाह की किताब की एक आयत के जरिये इसे समझने में आसानी होगी !

'' कुछ लोग कहते हैं के हमने सुन लिया हालाँकि सुनते सुनाते कुछ नहीं '' ¼vk; rfd rkc vYykg½

इस आयत से साबित होता है के सुनना, समझने के लिये होता है ख़ाली सुनने के लिये नहीं होता हालात ये हो रही है के अगर आम आदमी की समझ में कोई बात ना

आये तो बेचारे ये समझते हैं के बहुत बड़ी और महान बात हो रही है और इस इल्म के ना होने का फायदा मुल्ला लोग उठाकर लोगों को हक़ीक़त से दूर करते हैं !

dOokyh% क़व्वाली लफ्ज़, दो लफ्ज़ों से मिलकर बना है एक लफ्ज़ है कौल और दूसरा लफ्ज़ है वली - कौल का मक़सद है " कहा हुआ " " फरमाया हुआ " किसी अल्लाह के वली का ! तो क़व्वाली के मायने हुए अल्लाह के वली का कहा हुआ, फरमाया हुआ, लिखा हुआ या अल्लाह के वली की शान ब्यान करने के लिये लिखा, पढ़ा, सुना गया कलाम जो साज़ के साथ, हारमोनियम, ढोलक, तबले या और किसी साज़ के साथ मिलकर गाया जाये !

बेहतर आवाज़ लय के साथ सुनना, बेहतर अलफाज़, बेहतर आवाज़, बेहतर लय ये सब मिलकर एक कैफियत बनाते हैं और इस कैफियत को पसंद करना, बारीये तआला ने इंसान के मिजाज़ में रखा है इसलिये हर इंसान क़व्वाली पसंद करता है !

इस्लाम गिरोहों और फिरकों में बंट गया है और सारे गिरोह अपने-अपने बने हुए अक़ीदे के मुताबिक़ क़व्वाली के बारे में बिना सोचे समझे कुछ भी कहते रहते हैं फतवे देते रहते हैं कुछ लोग सिर्फ सुनकर ही बहुत बड़े आलिम बनने का दावा करने के लिये क़व्वाली सुनने को हराम क़रार देते हैं ये वो फतवेबाज़ लोग हैं जो ताज़िया देख लेने से निकाह टूट जाता है ऐसे बेवकूफी से भरे फतवे देकर

लोगों में फ़ितने फ़साद फैलाते हैं यक़ीनन ऐसे लोगों के तो निकाह हुए बिना पहले ही कई निकाह टूट गये होंगे क्योंकि बचपन से लेकर जवानी तक ना जाने कितनी बार इमाम आली म़काम का ताज़िया देखा होगा !

हराम खोर मुफ्ती और मुल्लाओं ने अपनी मर्ज़ी से फतवे देकर पूरी क़ौम को गुमराह, बदनाम, और शर्मसार कर रखा है !

अगर आपको इस बात का यक़ीन नहीं है तो किसी एक मसले पर एक फिरके के मुफ्ती के पास जाईये वो फतवा देगा फिर उसी मसले को किसी दूसरे फिरके के मुफ्ती के पास अलग कागज़ लेकर, उस पर लिखकर ले जाईये वो अलग फतवा देगा, तीसरा अलग देगा, चौथा अलग देगा अबे मज़ाक बना दिया फतवे जैसी अहम चीज़ को ! बेशक सब मुफ्ती और मुल्ला एक जैसे नहीं हैं इस बारे में आगे कभी हक़ीक़त सामने लाने की कोशिश की जायेगी !

बहरहाल जो लोग क़व्वाली को हराम और नाजायज़ करार देते हैं उन्हें बहुत ग़ौर और फिकर के साथ क़ुरान शरीफ की सूरह ''काफ'' पढ़ने, अच्छी तरह पढ़ने और समझ कर पढ़ने का मशवरा है अल्लाह की किताब से बढ़कर रस्मी मिलावटी शरीयत कभी भी नहीं हो सकती !

कुछ लोग सिर्फ ढफ के साथ हलाल करार देते हैं ढोलक के साथ हराम, इस ग़ुलाम के बड़े पीर भाई ने एक बार फरमाया के अजीब बात है ढोलक को बीच में से

काटकर एक हिस्से को बजाते हुए गाना हलाल है और दोनों हिस्सों को साथ लेकर बजाते हुए गाना हराम है अजीब मामला है !

सरकार शैख़ मोहय्युद्दीन इब्ने अरबी ने फरमाया है '' परी तो अपना मुँह छुपाये शैतान अपनी कारस्तानी दिखाये, हैरत से अक्ल जल जाती है के मामला क्या है ? ''

इसमें तसव्वुफ की समझ रखने वालों के लिये समझ और इशारा और दाल है !

क़व्वाली के अन्दर साज़ के साथ, हम्द, नात, मनक़बत, ग़ज़ल गायी जाती है एक अलग चीज़ भी है जिसको कौल कहा जाता है ये वो चीज़ है जब खुम्म ग़दीर के मौक़े पर सरकारे दो आलम ने हज़रत मौला अली मुश्किल कुशा को अपना जा नशीन और वारिस करार दिया और फरमाया '' जिसका मैं मौला हूँ उसका अली मौला है '' इसको कौल कहा जाता है जिन ख़ानकाहों या गद्दियों पर मेहफिले समाँ कौल से शुरू नहीं होती है वो मक़ामे विलायत और मम्बाये विलायत की अहमियत से अन्जान है !

महफिले समाँ, क़व्वाली अगर किसी भी ख़ानक़ाह में हो रही है तो तसव्वुफ और तरीक़त के ऐतबार से क़ौल से ही शुरू होनी चाहिये !

सूरह ''काफ'' का तर्जुमा पढ़ लेने और समझ लेने के बाद भी अगर कोई मुफ्ती क़व्वाली के ख़िलाफ फतवा देता है किसी भी क़िस्म की बेकार बहस करता है उसे

हुज्जतुल इस्लाम, सरकार इमाम ग़ज़ाली के इस फरमान को समझने की ज़रूरत है के '' क़व्वाली जिसे सुनकर शहवत और हवस पैदा हो हराम है क़व्वाली जिसे सुनकर अन्दर की पाकी आये, कैफियत पैदा हो, इश्के हक़ीक़ी पैदा हो मुबाह यानि बेहतर है ''

बेशक ये तसव्वुफ का ख़ादिम ये ब्यान करता है के अगर क़व्वाली महज़ तफ़रीह और दिल को बहलाने के लिये सुनी जाये तो दिमाग़ को भटका कर उलझाव पैदा करती है क़व्वाली हक़ीक़त में अहले तसव्वुफ के लिये रूहानी ख़ुराक़ है और अहले तसव्वुफ के लिये है !

आजकल के दौर में कुछ ताज़िर सिर्फ पैसा कमाने की ग़रज़ से किसी भी तुक्केबाज को जो अपने आप को शायर कहता है उसे मामूली रकम देते हैं कुछ झूठी किताबें देते हैं और वो तुक्केबाज शायर कुछ भी उल्टा-सीधा लिख देता है वो ही ताज़िर फिर किसी भी तरीक़त और तसव्वुफ से अन्जान क़व्वाल से वो क़िस्सा क़व्वाली की शक्ल में गवा लेते हैं और फिर ऐसी सी.डी. या कैसेट दरगाहों से बाहर ख़ूब बिकती है आम लोग ख़रीदते भी हैं और फिर देखकर-सुनकर गुमराह भी हो रहे हैं उनके दिमागों में कूड़ा भरा जा रहा है और वो ख़ुशी-ख़ुशी ख़ुद को भटकाव में डाल रहे हैं और खुश हैं के बड़ा नेक अमल कर रहे हैं !

ऐसे तुक्केबाज शायरों और क़व्वालों की वजह से तसव्वुफ जैसे पाक दायरे पर कुछ जाहिली आलिमों को

तसव्वुफ पर उंगली उठाने, इलज़ाम लगाने का मौका मिलता है !

बस ऐ मेरे दिली दोस्तो, तसव्वुफ के इस ख़ादिम ने जो कुछ बचपन से देखा, सीखा, तजुर्बा किया वो सब आपके सामने पेश कर दिया, मुमकिन है कि कुछ हक़ीक़त से बेख़बर लोगों को ये पसंद ना आये तो जिनको पसंद ना आये तो यक़ीनन उनके लिये ये अलफाज़ थे ही नहीं ये माना जाये और जिनको समझ ना आये वो ज़रा ज़्यादा ग़ौर और फिकर करके समझने की कोशिश करें ! ये चन्द अलफाज़ तसव्वुफ और तरीक़त के नज़रिये से बोले गये हैं इस वक्त की ज़ाहिरी, मिलावटी, रस्मी, रिवाज़ी, शरीयत मानने वालों से इस तसव्वुफ के ख़ादिम को कुछ लेना-देना नहीं है इस ख़ादिम ने तो हज़ारों साल से सोये हुए इन्सानों को जगाने की कोशिश की है !

बस किसी भी दरगाह पर जायें तो पूरे अन्दर और बाहर के अदब का ख़्याल रखें जब आप अन्दर - बाहर का पूरा अदब रखेंगे तब ही आपकी हाज़री कुबूल होगी और आप फैज़याब होंगे ! जागने, होश में रहने और ख़ुद को बदलने की जिम्मेदारी हमारी ही है !

दरगाहों पर हाज़िर होने का जो सही और क़ाबिले कुबूल पूरा तरीक़ा है उसको समझकर और जानकर अमल में लाकर दरगाहों पर हाज़िर हों, दलालों - एजेण्टों और हर क़िस्म के भिखारियों से बचें, बस अब हो तो हाज़री हो,

मुलाकात हो, ख़बर मिल जाये के हाँ तेरा आना क़ुबूल है वरना सब बेकार है !

कुछ नासमझदार लोगों को, हो सकता है ये अलफाज़ भी फतवा देने या काफिर करार देने का बहानाबने उनसे ये ख़ादिम बिना किसी शर्त के माफी का तलबगार है !

एक नई सुबह की शरूआत

ftld Hkh the vk; okgh ik; jk'kuh
geu rkfny tykdj ljvkej[kfn;k

QDr

ख़ादिमे तसव्वुफ-सूफी गयासुद्दीन शाह

मरकज़े तसव्वुफ 1011-E-वार्ड नं. 7
दरगाह सरकार ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार
काकी कु.सि.अ., महरौली, नई दिल्ली - 110030
Ph. : 7838116286, 09899943607

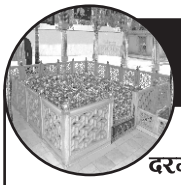

मरकज़े तसव्वुफ

ख़ानक़ाह शरीफ dknfj ; k& 'kÙkkfj ; k&fp 'fr ; k
दरगाह सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.
1011-E-First, *njxkg 'kjhQ] egjkSyh] ubZ fnYyh*110030

तालीमात

1 कम बोलो, आहिस्ता बोलो, मीठा बोलो !

2 ज़ुबान अलिफ है इसका गलत इस्तेमाल ना करो !

3 जो भी तुम बोलोगे, करोगे-वो ही पलट कर तुम पर ही आयेगा !

4 सन्नाटे को सुनने की कोशिश, अल्लाह को सुनने की कोशिश है !

5 सन्नाटे को सुनो, ये क़ीमती है, इसे अपने अन्दर इकट्ठा करो !

6 आवाज़ और अल्फाज़ों के असर को जानो सिर्फ मौहब्बत से, मौहब्बत के लिये ही बोलो इससे रहमत, बरकत, सलामती नाज़िल होती है !

7 हमारा सबसे बड़ा दुश्मन हमारी ग़फलत है और हमारा सबसे बड़ा दोस्त और हमदर्द हमारा होश है !

8 अदब से शउर, शउर से समझ, समझ से होश और होश से रहमत - बरकत-इल्म-अमल -अख़लास आता है !

9 माफ करो-माफ किया जायेगा-रहम करो-रहम किया जायेगा बख्श दो-बख्श दिया जायेगा !

10 जो चाहिये, वो दो-पहले दो !

ख़ादिमे तसव्वुफ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह

درگاہ حضرت خواجہ قطب الدین بختیار کاکی قدس سرہ العزیز

بہ گرداب بلا افتادہ کشتی

مدد کن یا قطب الدین چشتی

۲۵۰	۲۵۳	۲۵۶	۲۴۲
۲۵۵	۲۴۳	۲۴۹	۲۵۴
۲۴۴	۲۵۸	۲۵۱	۲۴۸
۲۵۲	۲۴۷	۲۴۵	۲۵۷

ضعیفان شکستہ را تو پشتی

بسم اللہ الرحمن الرحیم

l jdkj [.okt k .drcÌhu ck&b[R;kj dkdh dk ;uD'k
ejdt r l0oQ l jdkj [okt k drcÌhu ck&b[R;kj dkdh
¼d-fl-v-½ l gkfly fd;k tk ldrk g

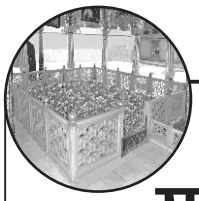

ख़ादिमे तसव्वुफ

सरकार
सूफी गयासुद्दीन शाह

कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी

پڑھنا ہے، پڑھانا ہے، سیکھنا ہے، سکھانا ہے
خود کو اور سب کو آگے لے جانا ہے

पढ़ना है, पढ़ाना है, सीखना है, सिखाना है।
खुद को और सबको आगे ले जाना है।

چاہے آدھی روٹی کھایئے
لیکن بچوں کو ضرور پڑھایئے

चाहे आधी रोटी खाइये।
लेकिन बच्चों को ज़रूर पढ़ाईये।

मरकज़े तसव्वुफ

दरगाह हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन
बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)
1011-E-First, njxkg'kjhQ]egjkSyh]ubZ fnYyh 10030
फोन : 07838116286, 011-26646216

MARKAZE TASAWWUF

دُعائے با-اختیار کاکی قدس سرہٗ العزیز

قطبِ دیں، قطب الہند، با۔اختیار کاکی کے واسطے
کھول دے میرے لئے ترقی کے سب راستے

مَرکز تصوف کو تصوف کا مرکز دے بنا
علِمِ باطن کا ہمیشہ بول بالا ہو سدا

رسمی، تقلیدی، روایتی، علم سے مجھ کو بچا
معاف فرما دے میرے مولیٰ میری ہر اک خطا

شکریہ سدشکریہ، صوفی غیاث الدین پر ہر لطف وکرم کے لئے
ہر رحم اور ہر کرم، ہر فیض یابی کے لئے

قبلہ امیر الدین کی کر سادگی مجھ کو عطا
پاک دل اور پاک خیال سے کروں سب کا بھلا

یا الٰہی قبول فرما مجھ کو تصوف کے لئے
علِمِ مکاشفہ، علِمِ باطن، علِمِ لدونی کے لئے

لفظ کم ہیں حالت دل کو سنانے کے لئے
کر قبول میری ہر دعا قادری، چشتی،
شُطاری گھرانے کے لئے

اٰمین اٰمین

مَرکزِ تصوّف
خانقاہ شریف: قادریہ، شطاریہ، چشتیہ
درگاہ سرکار خواجہ قطب الدین با اختیار کاکی قدس سرہٗ العزیز ۱۰۱۱، ٹی۔ یھلا، درگاہ شریف مہرولی، نئی دہلی-۱۱۰۰۳۰
7838116286, 9899943607

दुआए बा-इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

dRc nh] drcy fgUn] ck&b[R;kj dkdh d okLr
[kky n ej fy; rjDdh d lc jkLr

ejdt r lOoQ dk] r lOoQ dk ejdt n cuk
bYe ckfru dk ge'kk ckycky gk lnk

jLeh] rdyhnh] fjok;rh] bYe l e>dk cpk
ekQ Qjek n ej ekyk ejh gj bd [krk

'kfd;k ln 'kfd;k] lQh x;k líhu ij]gj yRQk dje d fy;
gj jge vkj gj dje] gj Qt;kch d fy;

fdcyk veh: íhu dh dj] lknxh e>dk vrk
ikd fny vkj lkQ fny l d:¡ lcdk Hkyk

;k bykgh dcy Qjek e>dk r lOoQ d fy;
bYe edk'kQk] bYe ckfru] bYe ynuh d fy;

y¶t de g] gkyr fny dk lukus d fy;
dj dcy ejh gj nvk] dknjh] fp'rh]
'kRrkjh ?kjku d fy,

आमीन आमीन

मरकज़े तसव्वुफ
ख़ानक़ाह शरीफ कादरिया-शुत्तारिया-चिश्तिया
दरगाह सरकार ख्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)
1011-E-First, njxkg 'kjhQ] egjkSyh] ub fnYyh&110053
7838116286, 9899943607

शजराये क़ुतबिया - चिश्तिया - आलिया

(1) bYrtk lu y [knk [k:y ojk d okLr → ljoj vkye bekey vfEc;k d okLr
(2) fny l tk vkrh g yc i ok nvk djy dcy → 'kkQk, eg'kj ekgEen eLrQk d okLr
(3) gkfey eu dUrk ekyk] tk u'khu eLrQk → Qkrg [kcj vyh ef'dy d'kk d okLr
(4) u,;jc jtr jhdre vknuc g:yÅ ye → [oktk,&[oktk glu cljh 'kgk d okLr
(5) dkck, edln bek] e[ktu flj fugk → vCn okfgn i'kok; vlfQ;k d okLr
(6) jguek; nhuk&bek] jktnkj du Qdk → 'kkg Qthy bCu v;kt gd uek d okLr
(7) jgcj x0okl] cgj dUrk dutu] e[kfQ;k → [oktk bckghe v/kecY[kh] gd uek d okLr
(8) vkfjQ vljkj dYyh] egje jkt [kQh → c&gtQk ejv'kh bYey gnk d okLr
(9) fdcyk, beku vknhu] vkbuk, gDdy ;dh → c&gjjk] [oktk cljh c fj;k d okLr
(10) lkfgc bjQk o gnj my vlj] 'kku vkfy;k → [oktk, ee'kkn nhujh] 'kgk d okLr
(11) vkQrkc flj bjQk] egje jkt fugk → [oktk c blgkd 'kkeh fny:ck d okLr
(12) dnjry gd] okyh; vdyhe] vljkj cdk → 'kkg vch vgen ydk;] gduek d okLr
(13) eEc; vuokj bjQk] etgj flj fugk → uklgmíhu] c ekgEen c fj;k d okLr
(14) jQvr 'kku vrk] vkt deky bRrdk → ukflj my gd [oktk c ;lQ 'kgk d okLr
(15) iklcku bYek fgder jguek; evkjQr → [oktk ekнn fp'rh ck lQk d okLr
(16) etgj tnk dje] uj cdk] 'kEek, gje → [oktk ftUnuh 'kgk] lnd o lQk d okLr
(17) rktnkj feYd bjQk] xjd cgj yk edk → [oktk mleku gk:uh] 'kgk d okLr
(18) fny :ck; vkfy;k] [oktk ekbuíhu glu → fgUn d okyh] 'kgk tnk l[kk d okLr
(19) elnj bjQk] 'kghn b'd] :g vk'dh → [oktk drcíhu] ckb[R;kj dkdhe&ydk d okLr
(20) i'kok; vgy gd] xty 'kdj ckck Qjhn → xkgj rkt foyk;r] gd uek d okLr
(21) [klj&o [kck futkeíhu egcc bykg → jguek; ljfxjkg vkfy;k d okLr
(22) xjd cgj gd] ulh:íhu pjkx ngyoh → uk&[knk; d'rh;] vgy lQk d okLr

شجرئے قطبیہ - جشتیہ - عالیہ

(1) التجا سن لے خدا خیر الوریٰ کے واسطے ← سرورِ عالم امام الانبیاء کے واسطے
(2) دل سے جو آتی ہے لب پہ وہ دُعا کرلے قبول ← شافع محشر محمد مصطفیٰ کے واسطے
(3) حاملِ مَن کنتُ مولیٰ، جانشینِ مصطفیٰ ← فاتحِ خیبر علی مشکل کشاء کے واسطے
(4) نیّر بُرجِ طریقت ، معدنِ بحر العلوم ← خواجۂ خواجہ حسن بصری شہا کے واسطے
(5) کعبۂ مقصودِ ایماں، مخزنِ سرِ نہاں ← عبدِ واحد پیشوائے اصفیاء کے واسطے
(6) رہنمائے دین و ایماں، رازدارِ کن فکاں ← شاہ فضیل ابنِ عیاض حق نما کے واسطے
(7) رہبرِ غوّاص، بحرِ کنتُ کنزاً مخفیا ← خواجہ ابراہیم ادہم بلخی، حق نما کے واسطے
(8) عارفِ اسرارِ کلّی، محرمِ رازِ خفی ← بو حزیفہ مرعشی علم الہدیٰ کے واسطے
(9) قبلۂ ایمان و دین، آئینۂ حقُّ الیقیں ← بو ہریرہ، خواجہ بصری بے ریا کے واسطے
(10) صاحبِ عرفاں و ہیدر العصر، شانِ اولیاء ← خواجۂ ممشاد دینوری شہا کے واسطے
(11) آفتابِ سرِّ عرفاں، محرمِ رازِ نہاں ← خواجہ بو اسحاق شامی دلربا کے واسطے
(12) قدرت الحق، والئے اقلیم، اسرارِ بقا ← شاہ ابی احمد لقائے، حق نما کے واسطے
(13) منبعِ انوارِ عرفاں، مظہرِ سرِّ نہاں ← ناصح الدین، بو محمد بے ریا کے واسطے
(14) رفعتِ شانِ عطا ، اوجِ کمالِ اِتّقا ← ناصرِالحق خواجہ بو یوسف شہا کے واسطے
(15) پاسبانِ علم و حکمت ، رہنمائے معرفت ← خواجہ مودود چشتی با صفا کے واسطے
(16) مظہرِ جودو کرم ، نورِ بقا، شمعِ حرم ← خواجہ زندنی شہا، صدق و صفا کے واسطے
(17) تاجدارِ ملکِ عرفاں، غرقِ بحرِ لامکاں ← خواجۂ عثمان ہارونی، شہا کے واسطے
(18) دلرُبائے اولیاء ، خواجہ معین الدین حسن ← ہند کے والی، شہا جودو سخا کے واسطے
(19) مصدرِ عرفاں، شہیدِ عشق، روحِ عاشقی ← خواجہ قطب الدین با-اختیار کاکی مہ لقا کے واسطے
(20) پیشوائے اہلِ حق، گنج الشکر بابا فرید ← گوہرِ تاجِ ولایت، حق نما کے واسطے
(21) خُسروے خوباں نظام الدین محبوبِ الٰہ ← رہنمائے سَرگروہِ اولیاء کے واسطے
(22) غرقِ بحرِ حق ، نصیر الدین چراغِ دہلوی ← ناخدائے کشتئے ، اہلِ صفا کے واسطے

㉓ eEck, flj cdk] beku rlyhek jtk → 'kkg dekyy gd] deky bRrdk d okLr
㉔ gtjr [oktk fljkty gd] vehu flj gd → p'ek, vljkj gd] 'k[ky vlfQ;k d okLr
㉕ lkgc bYe gnk] :g j&oku vkfy;k → 'k[k bYey gd] pjkx bUuek d okLr
㉖ :, uj ;tnh] vuokj lkr ljenh → [oktk, egen jktu gd uek d okLr
㉗ dkfey vk vdey] teky gd] teky vgenh → 'k[k tEeu jkgcj 'kkgk&xnk d okLr
㉘ [oktk 'k[k ekgEen ;k dg 'k[k glu → dkf'kQ vljkj dRc vkfy;k d okLr
㉙ okyh;] feYd gdhdr] etg:Yykg vLlen → gtjr 'k[k ekgEen] c fj;k d okLr
㉚ ryvr bdku gd] drcy enhuk] 'kku gd → vkfjQ vYykg 'k[k ;kg;kenuh 'kgk d okLr
㉛ gtjr lQh dyhemYykg 'k[ky vkfy;k → etgj 'kku Quk] 'kku cdk d okLr
㉜ p'ek;] bjQk] futkeíhu 'k[ky vk'kdhu → vter vkjxkcknh jguek d okLr
㉝ eEc, vljkj] Q[kj v0oyhu ok vk[kjhu → [oktk Q[k:íhu ekgEen gd uek d okLr
㉞ Q[kjg d]Q [kjt gk]u je kgEEnu jg d → rktnkj fd'oj] vgy lQk d okLr
㉟ bYe ckfru d vehu] xUthuk, vljkj nh → gtjr [oktk lyeku c fj;k d okLr
㊱ okfdQ jkt bykgh] vkfye bYe [kQh → 'kkg ekgEen [kjkcknh [k'k ydk d okLr
㊲ nLr xkg rkjhdn&nfu;k ydc ljnkj cx → [oktk,&[oktk glu vgen 'kgk d okLr
㊳ gtjr fetk ekgEen cx 'kkg evkjQr → gknh; jkg rjhdr] gd uek d okLr
㊴ gtjr fetk egcc cx Qjny Qjhn Qh rkghn → ekgrkc fp'fr ;k] dyUnjh ck lQk d okLr
㊵ gtjr [oktk fdcyk veh:íhu vuokj ;dh → nhu d gdhdh vehj cgj ydk d okLr
㊶ [kkfne rl0oQ lQh x;kl íhu uj evkjQr → vkfjQ dkfey] pjkx ij ft;k d okLr
㊷ vktth vgdj veh:íhu dh edcy dj → nhu gd d bu uQl dnfl;k d okLr

lTtknk u'khu
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी सय्यद अमीरुद्दीन शाह
dknjh] 'kkkjh] fp'rh] gk'keh] gluh] egcch
Qku : **9899943607**

मरकज़े तसव्वुफ
[kkfne rl0oQ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
dknjh] 'kkkjh] fp'rh] gk'keh] gluh] egcch
Qku : **7838116286**

1011-E-First, Landmark njxkg ljdkj drcíhu ck&b[R;kj dkdh ¼d-fl-v-½
egjkyh 'kjhQ] ub fnYyh&110030

(23) منبعِ سرِّ بقا، ایمانِ تسلیم و رضا ← شاہ کمال الحق، کمالِ اتّقا کے واسطے
(24) حضرت خواجہ سراج الحق، امینِ سرِّ حق ← چشمائے اسرارِ حق، شیخ اسفیاء کے واسطے
(25) صاحبِ علمِ ھدیٰ، روحِ روانِ اولیاء ← شیخ علم الحق، چراغِ انمآء کے واسطے
(26) روئے نورِ یزدی، انوارِ صوتِ سرمدی ← خواجۂ محمود راجن حق نما کے واسطے
(27) کامل و اکمل، جمالِ حق، جمالِ احمدی ← شیخ جمّن راہبر شاہ و گدا کے واسطے
(28) خواجۂ شیخ محمد یا کہیں شیخ حسن ← کاشفِ اسرارِ قطبِ اولیاء کے واسطے
(29) والئے ملکِ حقیقت، مظہرِ اللہ الصّمد ← حضرت شیخ محمد، بے ریا کے واسطے
(30) طلعتِ ایقانِ حق، قطب المدینہ، شانِ حق ← عارفِ اللہ شیخ یحییٰ مدنی شہا کے واسطے
(31) حضرتِ صوفی کلیم اللہ شیخ الاولیاء ← مظہرِ شانِ فنا، شانِ بقا کے واسطے
(32) چشمئہ عرفاں، نظام الدین شیخ العَاشقین ← عظمتِ اورنگ آبادی رہنما کے واسطے
(33) منبعِ اسرار، فخرِ اوّلین و آخرین ← خواجہ فخرالدین محمد حق نما کے واسطے
(34) فخرِ حق، فخرِ جہاں، نورِ محمد نورِ حق ← تاج دارِ کشورِ، اہلِ صفا کے واسطے
(35) علمِ باطن کے امین، گنجینۂ اسرارِ دیں ← حضرت خواجہ سلیمان بے ریا کے واسطے
(36) واقفِ رازِ الٰہی، عالِمِ علمِ خفی ← شاہ محمد خیرآبادی خوش لقا کے واسطے
(37) دست گاہِ تارک الدنیا لقب سردار بیگ ← خواجۂ خواجہ حسین احمد شہا کے واسطے
(38) حضرتِ مرزا محمد بیگ شاہِ معرفت ← ہادئے راہِ طریقت، حق نما کے واسطے
(39) حضرت مرزا محبوب بیگ فردالفرید فی توہید ← ماہتابِ چشتیا، کلندری با صفا کے واسطے
(40) حضرت خواجہ قبلہ امیرالدین، انوارِ یقیں ← دین کے حقیقی امیر بحرِ لقا کے واسطے
(41) خادمِ تصوف صوفی غیاث الدین نورِ معرفت ← عارفِ کامل، چراغِ پُرضیاء کے واسطے
(42) عاجزی احقر امیرالدین کی مقبول کر ← دین حق کے ان نفوسِ قدسیہ کے واسطے

MARKAZE TASAWWUF, MEHRAULI SHARIF, NEW DELHI-110030
مرکز تصوف

مَرکزِ تصوّف
خادمِ تصوّف
سَرکار صُوفی غیاثُ الدّین شَاہ
قادری، شُطاری، چشتی، ھَاشِمی، حُسَینی، محبوبی
فون نمبر: 7838116286

سجادہ نشین
مَرکزِ تصوّف
صُوفی سید امیرالدین شَاہ
قادری، شُطاری، چشتی، ھَاشِمی، حُسَینی، محبوبی
فون نمبر: 9899943607

۱۰۱۱، ئی۔ پھلا (اِمتیازی نشان) درگاہ سرکار قطب الدین با-اختیار کاکی قدس سرہ العزیز
مہرولی شریف، نئی دھلی- ۱۱۰۰۳۰

दुआ-ए-मरकज़े तसव्वुफ

① जानता हूँ हद से बढ़ कर हैं मेरी बद फेलियाँ → तू मगर है रहम वाला और बड़ा ही मेहरबाँ

② तेरी रहमत की कोई हद है ना कोई इन्तेहा → बारिशे इकराम कर दे बख़्श दे मेरी ख़ता

③ कर मुझे इल्मे लदूनी की ज़िया से फैज़याब → दूर हो जाए नज़र से सिर्रे हस्ती का हिजाब

④ हाँ वही इल्मे तसव्वुफ जो बुज़ुर्गों को मिला → जिस से इनके गुलशने हस्ती का हर गुन्चया खिला

⑤ जिस ने अहले मआरफत को आशनाए हक किया → जिस की सूरत पर हुए गरवीदा सारे औलिया

⑥ बख़्श दे मौला उसी इल्मे सफा की रोशनी → दिल से मिट जाये मेरे गुमराहियों की तेरगी

⑦ नासमझ ना फहम हूँ नूरे नसीरत कर अता → सारे पीराने तरीकत की मोहब्बत कर अता

⑧ नूरे इश्के पन्जतन से दिल मेरा मामूर कर → बादऐ ईमाँ की लज्ज़त से मुझे मस्तूर कर

⑨ कर बला की याद दिल में रोशनी बन कर रहे → उमर भर शब्बीर का ग़म ज़िंदगी बन कर रहे

⑩ दिल मेरा दुनिया की हर आलूदगी से पाक कर → मुझ को अहले मआरफत के रास्ते की ख़ाक कर

⑪ कर अता तौफीके कामिल हक परस्ती के लिये → मुन्तजब कर ले मुझे इरफाँ की मस्ती के लिये

⑫ दूर रख आमाले बद से, अहले शर के काम से → फितना परवर इल्मे रस्मी के सुनहरे दाम से

⑬ दुख, मुसीबत, कर्ज, बीमारी, बलाए नागहाँ → इन से रख महफूज़ हर दम ऐ ख़ुदाए मेहरबाँ

⑭ सबर ऐसा दे के मैं साबिर रहूँ हर हाल में → तेरे हर अहसान का शाकिर रहूँ हर हाल में

⑮ तुझ से उम्मीदे करम है वास्ता क्या तूर से → जगमगा दे दिल मेरा रूहानियत के नूर से

⑯ क्या बयाँ तुझ से करूँ मैं ए ख़ुदाए ज़लजलाज → सब अयाँ है तुझ पे मेरे ज़ाहिर व बातिन का हाल

⑰ अपनी शाने किबरियाई की झलक मौला दिखा → मुफलिसों को सदकऐ आले अबा कर दे अता

⑱ दस्त बस्ताऐ मुल्लजी हैं ख़ाके पाए औलिया → हो करम इन पर ब फैज़े बारगाहे चिश्तिया

⑲ मेरे मौला लाज रख ले बन्दऐ रन्जोर की → हाथ फैलाए हुए इस नातवाँ मजबूर की

⑳ अपनी रहमत का दिल 'फारूख' पर कर दे नज़ूल → करबला वालों के सदके ये दुआ कर ले कुबूल

lTtknk u'khu
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी सय्यद अमीरूद्दीन शाह
dknjh] 'kÙkkjh] fp'rh] gk'keh] gluh] egcch
Qku : 9899943607

मरकज़े तसव्वुफ
[kkfne rl0oQ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
dknjh] 'kÙkkjh] fp'rh] gk'keh] gluh] egcch
Qku : 7838116286

011-E-First, Landmark njxkg ljdkj drcíhu ck&b[R;kj dkdh ¼d-fl-v-
egjkyh 'kjhQ] ub fnYyh&110030

دُعائے مرکزِ تصوّف

1. جانتا ہوں حد سے بڑھ کر ہیں مری بد فعلیاں ← تو مگر ہے رحم والا اور بڑا ہی مہرباں
2. تیری رحمت کی کوئی حد ہے نہ کوئی انتہا ← بارشِ اکرام کر دے بخش دے میری خطا
3. کر مجھے علمِ لدونی کی ضیا سے فیض یاب ← دور ہو جائے نظر سے سرِ ہستی کا حجاب
4. ہاں وہی علمِ تصوف جو بزرگوں کو ملا ← جس سے ان کے گلشنِ ہستی کا ہرغنچہ کھلا
5. جس نے اہلِ معرفت کو آشنائے حق کیا ← جس کی صورت پر ہوئے گرویدہ سارے اولیاء
6. بخش دے مولیٰ اُسی علمِ صفا کی روشنی ← دل سے مٹ جائے مرے گمراہیوں کی تیرگی
7. نا سمجھ نا فہم ہوں نورِ نصیرت کر عطا ← سارے پیرانِ طریقت کی محبت کر عطا
8. نورِ عشقِ پنجتن سے دل مرا مامور کر ← بادۂ ایماں کی لذّت سے مجھے مستور کر
9. کربلا کی یاد دل میں روشنی بن کر رہے ← عمر بھی شبّیر کا غم زندگی بن کر رہے
10. دل مرا دنیا کی ہر آلودگی سے پاک کر ← مجھ کو اہلِ معرفت کے راستے کی خاک کر
11. کر عطا توفیقِ کامل حق پرستی کے لئے ← منتجب کر لے مجھے عرفاں کے مستی کے لئے
12. دور رکھ اعمالِ بد سے، اہل شر کے کام سے ← فتنہ پرور علمِ رسمی کے سنہرے دام سے
13. دکھ، مصیبت، قرض، بیماری، بلائے ناگہاں ← ان سے رکھ محفوظ ہر دم اے خدائے مہرباں
14. صبر ایسا دے کہ میں صابر رہوں ہر حال میں ← تیرے ہر احسان کا شاکر رہوں ہر حال میں
15. تجھ سے امید کرم ہے واسطہ کیا طور سے ← جگمگا دے دل مرا روحانیت کے نور سے
16. کیا بیاں تجھ سے کروں میں اے خدائے ذوالجلال ← سب عیاں ہے تجھ پہ میرے ظاہر و باطن کا حال
17. اپنی شانِ کبریائی کی جھلک مولا دکھا ← مفلسوں کو صدقۂ آلِ عبا کر دے عطا
18. دست بستہ مُلتجی ہیں خاکِ پائے اولیاء ← ہو کرم ان پر بہ فیضِ بارگاہِ چشتیہ
19. میرے مولا لاج رکھ لے بندۂ رنجور کی ← ہاتھ پھیلائے ہوئے اس ناتواں مجبور کی
20. اپنی رحمت کا دلِ فاروقؔ پر کر دے نزول ← کربلا والوں کے صدقے یہ دُعا کر لے قبول

مرکزِ تصوّف
خادمِ تصوّف
سرکار صوفی غیاث الدّین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ہاشمی، حسینی، محبوبی
فون نمبر : 7838116286

سجادہ نشین
مرکزِ تصوّف
صوفی سید امیرالدین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ہاشمی، حسینی، محبوبی
فون نمبر : 9899943607

۱۰۱۱، ئی۔ پھلا (اِمتیازی نشان) درگاہ سرکار قطب الدین با-اختیار کاکی قدس سرہ العزیز
مہرولی شریف ، نئی دھلی- ۱۱۰۰۳۰

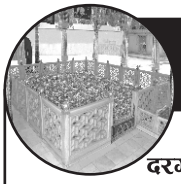

मरकज़े तसव्वुफ

ख़ानक़ाह शरीफ़ dknfj;k&'kÙkkfj;k&fp'fr;k

दरगाह सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

1011-E-First, njxkg 'kjhQ] egjkSyh] ubZ fnYyh&110030

तालीमात

1. जितना कमाऐं उससे कम खर्च हो ऐसी जिन्दगी बनायें।
2. दिन में कम से कम 3 लोगों की तारीफ करें।
3. खुद की भूल कुबूल करने में कभी भी शर्म न करें।
4. किसी के ख्वाबों पर कभी न हंसें।
5. अपने पीछे खड़े इन्सान को भी कभी आगे जाने का मौका दें।
6. रोज़ उगते हुये सूरज को ज़रूर देखें।
7. खूब ज़रूरी हो तभी कोई चीज़ उधार लें।
8. किसी से कुछ जानना हो तो नरमाई से दो बार पूछें।
9. कर्ज़ और दुश्मन को कभी बड़ा मत होने दें।
10. अल्लाह पर अटूट भरोसा रखें।
11. इबादत करना कभी मत भूलें ! इबादत में बहुत ताकत होती है।
12. हमेशा अपने काम से मतलब रखें।
13. वक्त सबसे ज्यादा कीमती है इसको फालतू कामों में खर्च न करें।
14. जो आपके पास है उसी में खुश रहना सीखें।
15. बुराई कभी भी किसी की भी मत करें क्योंकि बुराई नाव में छेद के समान है छेद छोटा हो या बड़ा नाव को डुबो ही देता है।
16. हमेशा सकारात्मक सोच रखें।
17. हर इन्सान एक हुनर लेकर पैदा होता है बस उस हुनर को दुनिया के सामने लाऐं।
18. कोई काम छोटा नहीं होता हर काम बड़ा होता है।
19. सफलता उनको ही मिलती है जो कुछ कोशिश करते हैं।
20. कुछ पाने के लिये कुछ खोना नहीं बल्कि कुछ पुरूषार्थ करना पड़ता है।

ख़ादिमे तसव्वुफ

lIdkj lQh x;klíhu 'kkg

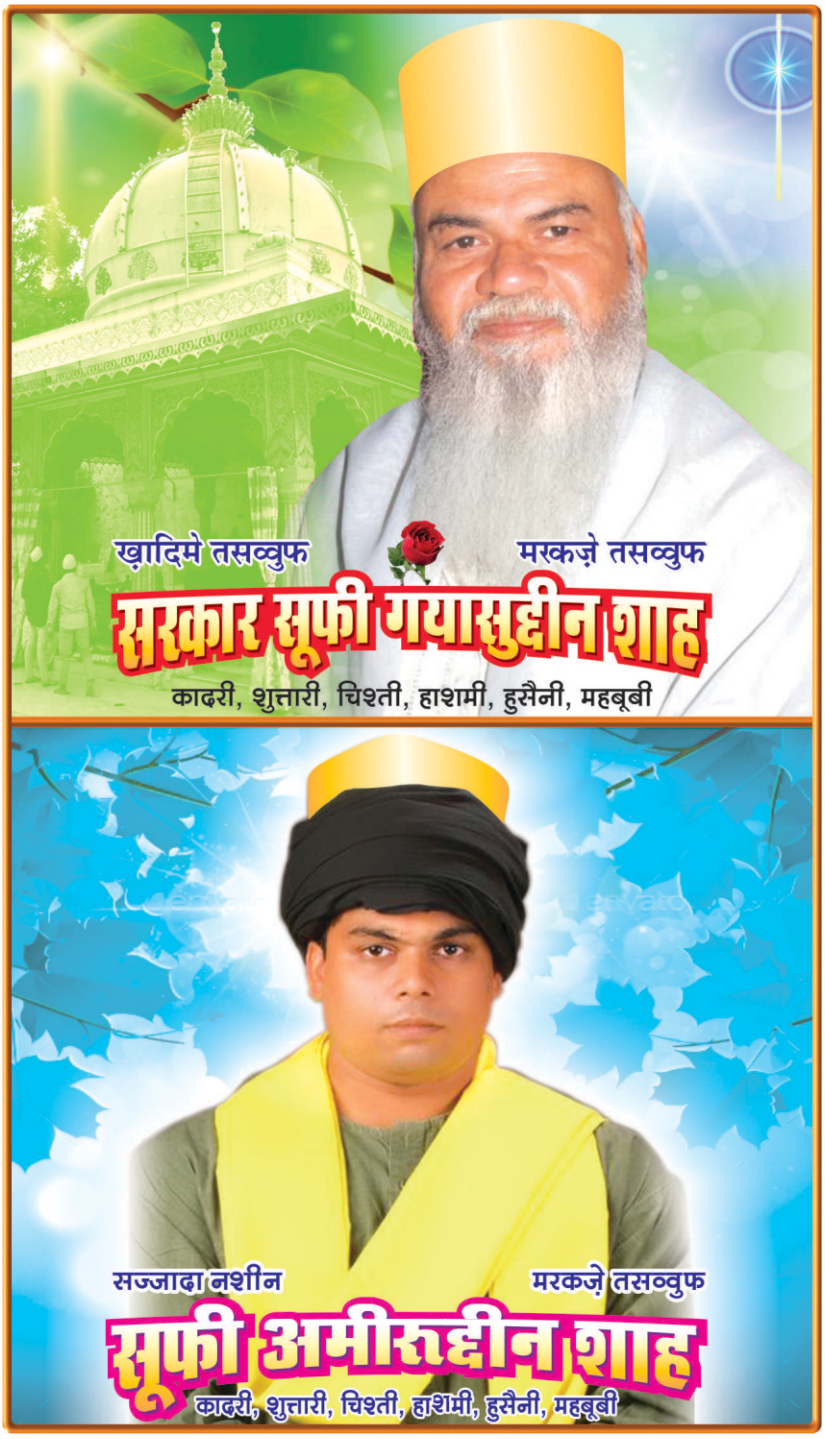
ख़ादिमे तसव्वुफ
मरकज़े तसव्वुफ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी अमीरुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी

SARKAR SUFI GHYASSUDDIN SHAH
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
Mob. : 7838116286
अन्दर की सलात बाहर की नमाज़
असरारे हकीकी
हकीकत के राज
ईमान और मुसलमान
اسرار حقیقی
क्या है?
कड़वी हकीकत
चुभते सच
सरकार कुतबुद्दीन बा-इख्तियार काकी व तसव्वुफ की तालीम
کیا ہے؟
दरगाह
राहत ख़ास अगरबत्ती
राहत ख़ास लोबान
Rahat Khas Attar
राहत ख़ास अतर
YA KARIM YA RAHMAN YA RAHIM
MARKAZE TASAWWUF
CONCEIVED & CREATED BY:
مرکزِ تصوف
मरकज़े तसव्वुफ
خانقاہ شریف: قادریہ، شطاریہ، چشتیہ
MARKAZE TASAWWUF
KHANQAH SHARIF Qadriya, Shuttariya, Chishtiya
Dargah Khwaja Qutbuddin Ba-Ikhtiyar Kaki (Q.S.A.)
1011/E-1, Ward No. 7, Mehrauli, New Delhi-110030
bulond STUDIO GRAPHICS
: 7982110663
Sufi Naushad Qadri Shuttari Chishti